ॐ जम्भेश्वराय नमः

श्री गुरू जम्भेश्वर जी महाराज द्वारा उच्चरित

सबदवाणी

❖ सम्पादक ❖

कृष्णानन्द आचार्य

(ऋषिकेश)

प्रकाशक :

जांभाणी साहित्य अकादमी

सैक्टर-1, E-134, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर (राजस्थान)

ISBN : 978-93-83415-03-8

(® प्रकाशक के अधीन सुरक्षित है)

संस्करण : 2022

मूल्य - 40 रुपये

मुद्रक : तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर

मो. 9314962474/75

श्री गुरू जम्भेश्वराय नमः

भूमिका

''ना मेरे मायन ना मेरे बापन, मैं अपणी काया आप संवारी''

अखंड सच्चिदानन्द परब्रह्म परमात्मा नित्य एकरस रहने वाले शुद्ध स्वरूप के न तो कोई माता है न ही कोई पिता या कुटुम्ब परिवार ही है। किन्तु जब भी जैसी आवश्यकता पड़ती है। उसी के अनुसार वे अपनी नवीन काया का निर्माण स्वयं कर लेते हैं अर्थात् जैसा चाहते हैं उसी रूप में प्रगट हो जाते हैं। जैसा कि गीता आदि शास्त्रों में कहा है - परमात्मा अपनी माया द्वारा सृष्टि की रचना करता है। सांसारिक प्राणी तो माया के अधीन है किन्तु वह त्रिगुणात्मिका माया परमात्मा के अधीन है। वैसे तो परमात्मा का स्वरूप अज, अव्यय, निराकार, निर्गुण आदि

विशेषणों से युक्त है। किन्तु जब जब धर्म की हानि होती है और पाप की वृद्धि होती है। संसार में कष्ट आ जाते हैं तो प्रभु अपने विविध शरीरों को धारण कर लेते हैं, जिसको हम अवतार भी कहते हैं।

अवतार किस रूप में कैसा हो, इसके लिए कोई नियम नहीं है। कभी मच्छ, कच्छ, वराह, नृसिंह, राम, कृष्ण, बुद्ध आदि रूपों में वे परमात्मा स्वयं आते हैं। उनके लिए शरीर, देश, काल का कोई महत्व नहीं है। अपनी माया द्वारा जैसा चाहे वैसा रूप बना लेते हैं।

संवत् 1508 भादव कृष्ण अष्टमी के दिन ग्राम पीपासर में लोहट जी के घर में एक बालक रूप में शक्ति अवतरित हुई। हालांकि उनके माता-पिता नहीं है, वे स्वयंभू हैं। फिर भी हम सांसारिक प्राणी अपने आपको सांत्वना देने के लिए माता-पिता, देश-काल नाम से सम्बन्ध अवश्य ही जोड़ लेते हैं। तो इसी प्रकार

से हमने कहा कि लोहट जी उनके पिता हैं। हांसा देवी उनकी माता है। जम्भेश्वर उनका नाम है। पीपासर (नागौर) उनका ग्राम है। संवत् 1508 भादव कृष्ण अष्टमी को वे जन्मे हैं। माता-पिता को सुख देने के लिए जैसे अन्य बालक जगत व्यवहार करते हैं, उसी प्रकार उन्होंने भी सांसारिक कार्य करते हुए लोहट हांसा को माता-पिता मानते हुए जगत में कार्य किया। जैसा कि वील्होजी कहते हैं -

बरस सात संसार, बाल लीला निरहारी।
बरस पांच बावीस, पाल एता दिन चारी।।
ग्यारै और चालीस, सबद कथिया अविनाशी।
बाल गुवाल गुरु ग्यान, मास तीन वरस पच्चासी।।
पनरासै रू तिराणवै, वदि मिंगसर नुंवि आगले।
पालटे रूप रहियो र, धू इडग जोति संभराथले।।

इस प्रकार अधिकतर समय सम्भराथल धोरे पर निरहारी रह कर अपनी अलौकिक ज्योति से जगत को अवलोकित किया। हम सभी का शरीर पांच तत्त्वों आकाश, वायु, तेज, जल, धरणी से बना है। इसलिए हमें जीवित रहने के लिए इन पांच तत्त्वों की आवश्यकता पड़ती है। इन पांचों तत्वों के बिना हम जीवित नहीं रह सकते। किन्तु इस सामान्य नियम के विरूद्ध जिनका शरीर केवल तेजोमय है, ज्योति स्वरूप है, जिनके ये पांचों तत्त्व एवं प्रकृति अधीन है, उनको इनकी आवश्यकता नहीं पड़ती। इसीलिए श्री गुरू जम्भेश्वर जी आजीवन यत् किंचित व्यवहारिक कार्य करते हुए भी निरहारी ही थे। कहा भी है – ''पूरक पूर पूरले पौण, भूख नहीं अन्न जीमत कौण'' राव वीदे ने पूछा था कि आपके शरीर से अलौकिक सुगंध आ रही है। आपने ऐसा कौन सा सुगन्धित तेल मर्दन किया है। ऐसी विचित्र महकार तो मैंने कभी न सूंघी है। तब गुरु जम्भेश्वर जी ने

कहा –

मोरे अंग न अलसी तेल न मलियो, ना परमल पीसायों।
जीमत पीवत भोगत विलसत दीसा नाहीं, म्हांपण को आधारो।।

अर्थात् हे वीदा! पृथ्वी का गुण गन्ध है। जो पृथ्वी का अंश अन्न जल ग्रहण करता है, उसी के शरीर में से गन्ध आती है। मेरे तेजोमय शरीर में तो यह स्वाभाविक सुगंध है क्योंकि मैं अन्न जल ग्रहण करता नहीं, जो गन्ध का कारण है। मुझे इन चीजों की जरूरत नहीं है क्योंकि जो सबका आधार है उनको अन्य वस्तु की आवश्यकता नहीं।

इस संसार में आने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए संवत् 1542 में कार्तिक कृष्ण वदि अष्टमी को सद्पंथ की स्थापना की, जो उन्नतीस नियम व विष्णु की उपासना पर आधारित है। भूले हुए प्राणियों को फिर से चेताया। उनका बताया

हुआ युक्ति मुक्ति का मार्ग ही विश्नोई पंथ कहलाता है। हम विश्नोई समुदाय ने अपना सद्‌गुरू परमात्मा स्वीकार कर लिया है, अपना मान लिया है कि हमारे गुरूदेव हैं। जब विश्नोइयों ने अपना मान लिया तो वे अन्य लोग दूर हट गये। कहने लगे ये तो विश्नोइयों के गुरु हैं हमें उनसे क्या लेना-देना। यह सांसारिक प्राणियों की तुच्छ भावना है, वे किसी एक के नहीं किन्तु सभी के होते हैं, योगदर्शन कहता है - ''स तु सर्वेषां गुरु कालेनानवच्छेदात्'' वह परमात्मा तो सभी का गुरु है और हमेशा ही रहता है। देश, काल, वस्तु, नाम उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती। वह देश काल वस्तु से परे है। सदा एकरस रहने वाले हैं। घट-घट में व्यापक हैं।

दिल दिल आप खुदायबंद जाग्यो, सब दिल जाग्यो सोई।
तिल में तेल पहुप में वास, पांच तत्व में लियो प्रकाश।।

जिस प्रकार तिल में तेल, फूल में सुगंध रहती है, उसी प्रकार पांच तत्वों में वह सामान्य रूप से रहते हैं। विशेष साक्षात्कार हृदय में सम्भव है। तो क्या ये उपदेश केवल विश्नोइयों के लिए ही है। ये तो मानव मात्र के लिए मानवता की रक्षार्थ उपदेश दिये गये हैं। किसी एक समुदाय का कोई अधिकार नहीं।

इन नियमों और सबदवाणी की जरूरत आज जितनी है शायद आज से पहले के कुछ वर्षों में उतनी नहीं थी। मानवता की रक्षा के लिए ये प्रहरी का काम कर सकते हैं। हम सभी मानव मात्र का यह कर्तव्य हो जाता है कि समय-2 पर गुरु जम्भेश्वर जी जैसी महान् विभूतियों द्वारा दिये हुए उपदेशों का पालन करें। उनका बताया हुआ मार्ग सत्य सनातन होता है, उसे स्वीकार करें। अपने जीवन को सफल बनायें। इस वर्तमान भौतिक युग में मानव शांति का एक मात्र यही उपाय है। गुरु जी की सबदवाणी उन्नतीस नियम सभी वेद शास्त्रों का सार होते

हुए समसामयिक भी हैं। तत्कालीन जाति वर्ग का भेदभाव छोड़कर सबदवाणी का उपदेश दिया। इस समय भी वैसा ही उपदेश उपयोगी सिद्ध होगा।

अपने जीवन काल में अनेकों सबद गुरु जम्भेश्वर जी ने कहे। किन्तु इस समय हमारे पास 120 सबद ही प्रामाणिक रूप से विद्यमान हैं, बाकी सभी काल कवलित हो गये। तत्कालीन साधन का अभाव होने से अन्य प्रकार को न अपनाकर संतों ने कण्ठस्थ करके इन वर्तमान सबदों की रक्षा की थी। परम्परा से इन्हीं रूप में चलते आये, बाद में इनको हस्तलिखित रूप दिया गया था। जो आज यत्र तत्र अनेक रूपों में प्राप्त हैं। हस्तलिखित में भी व्यापक पाठ मतभेद है। समय ने करवट ली और वर्तमान आधुनिक युग में सबदवाणी प्रेस चढ़ी। उस समय भी सबदों में काफी उलट-पुलट हुई थी। संशोधन के नाम पर शुद्ध मरूभाषा को संस्कृतनिष्ठ हिन्दी सबदों में बदल दिया गया। इसलिए वर्तमान में प्रचलित

सबदवाणी पाठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों से मेल कम खाती है। कहीं-कहीं मतभेद है, कई पंक्तियां छूटी हुई प्रतीत होती हैं। यदि इस समय प्राचीन हस्तलिखित प्रतियो से छपवाया जाऐ तो जनता स्वीकार नहीं करेगी क्योंकि अधिकांश लोगों को ये वर्तमान प्रचलित सबद कण्ठस्थ हो चुके हैं तथा घर-घर में यही सबदवाणी पहुंच चुकी है। इसी को सत्य मानते हैं, प्राचीन को अशुद्ध मानते हैं। हमारे पास जनाधार ही सबसे प्रबल प्रमाण है।

इसलिए इस बार भी वही वर्तमान प्रचलित सबदवाणी का प्रकाशन इन बड़े अक्षरो में किया है, जो पहले भी संवत् 2024 से बिश्नोई मन्दिर ऋषिकेश से छपता आ रहा है। इसकी प्रतियां लगभग 49 हजार से ऊपर निकल चुकी हैं, उसी को ही इस समय आपके सामने जांभाणी साहित्य अकादमी के माध्यम से प्रकाशित करवाकर प्रस्तुत किया जा रहा है। जो पूर्व में प्रसिद्ध सबदवाणी प्रचलित है उसको

ज्यों की त्यों प्रकाशित करवाने का प्रयत्न किया है।

कुछ दिनों से एक आम चर्चा हो रही है कि हवन पद्धति कैसी होनी चाहिए। क्योंकि हम लोग सबदवाणी द्वारा ही हवन करते हैं। इसीलिए यहां पर इस समस्या का समाधान मैं अपनी बुद्धि अनुसार करना चाहता हूं। वैसे तो मैं चाहता था कि पूज्य महात्माओं, सद्भक्तों, विद्वानों से इस सम्बन्ध में विचार विमर्श करता किन्तु समयाभाव के कारण ऐसा नहीं हो सका। इस समय तो इस गुटके में थोड़ा-सा क्रमिक परिवर्तन करके वही रूप प्रस्तुत कर रहा हूं जो प्रचलित है। वैसे यज्ञ की कोई एक पद्धति अब तक हिन्दू समाज में नहीं हो सकी है। सभी समुदाय अपनी रुचि के अनुसार ही नई-नई पद्धतियां अपना रहे हैं। पद्धति कुछ भी हो लक्ष्य सभी का एक ही है।

इस गुटके में सर्वप्रथम ''गुरु जम्भेश्वर जी'' द्वारा बताई हुई सन्ध्या

(नवण) का पाठ रखा गया है। पूर्व में सन्ध्या द्वारा अन्त:करण पवित्र कर लेने के बाद हवन प्रक्रिया प्रारम्भ की जाती है। तत्पश्चात् 'गोत्राचार' जिसके द्वारा वरूण, अग्नि, ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं का आह्वान आहुति ग्रहणार्थ किया जाता है। फिर 'वैदिक मन्त्र'' जिनके द्वारा पृथक्-पृथक् देवताओं को आहुतियां दी जाती हैं। जिससे वैदिक परम्परा का पालन भी भली-भांति हो जाता है। सूर्यादि देवताओं को प्रसन्न करने के बाद '120 सबदवाणी' का पाठ उपयुक्त है जिसके द्वारा पारब्रह्म परमात्मा विष्णु के निमित स्वाहा द्वारा हवन सामग्री घृतादिक अर्पण की जाती है। सबद का उच्चारण सस्वर करना ही श्रेयस्कर है। अन्यथा कोई लाभ नहीं होता। अन्तिम सबदों द्वारा दी हुई आहुतियां एक विष्णु के अर्पण होने से सभी उसमें समाहित हो जाते हैं। इसलिए मन्त्रों द्वारा अलग आहुति देने की आवश्यकता नहीं रह जाती। यही विधान है, परम्परा से चला भी आया है।

हवन के बाद कलश पूजा, पाहल मन्त्र, गुरु मन्त्र, बालक मन्त्र, उन्नतीस धर्म नियम तथा विविध प्रकार की व्याख्यायें अनेक छन्दों में दी गई है। अन्त में आरती, धूप मन्त्र, पूर्णाहुति आदि दी गई है। जो शायद आप लोग पसन्द करेंगे। यदि इसमें कोई त्रुटि होगी तो आगामी प्रकाशनों में सुधार दी जायेगी और अन्य कोई प्रैस सम्बन्धी त्रुटि के लिए आगामी प्रकाशन तक हम क्षमा प्रार्थी हैं।

-0-0-0-

निवेदन

''होम हित चित्त प्रीत सूं होय'' नित्य प्रति हवन करना चाहिए। इससे स्वार्थ तथा परमार्थ दोनों ही सिद्ध होते हैं। किन्तु सफल तभी होता है जब विधि-विधान से तथा चित्त लगाकर और प्रेम से किया जावे। अन्यथा बिना प्रेम तथा बिना एकाग्रता के किया हुआ हवन निष्फल होता है।

हवन प्रात:काल सूर्योदय पश्चात् सायंकाल में सूर्यास्त से पूर्व ही करना चाहिए। रात्रि में हवन करने का विधान नहीं है। जगह साफ सुथरी, पवित्र जिसमें पक्का आंगन धुला हुआ तथा कच्चा आंगन लिपा हुआ होना परमावश्यक है।

हवनकर्ता भी अन्तर बाह्य शुद्ध पवित्र अन्त:करण वाला होना जरूरी होता है। हवन सामग्री सम्यक् रूपेण देखकर लेनी चाहिए। जिसमें कीट आदि या

अन्य वर्जनीय वस्तुएं न हों। हवन में काम आने वाली सामग्री जैसे- गऊघृत, खोपरा, गूगल, अन्य सामग्री तथा पीपल, खेजड़ी, आम आदि की लकड़ी ली जा सकती है। हवन पश्चात् कलश पूजा करें। पाहल के लिए मिट्टी का नया घड़ा, उसके ऊपर सफेद वस्त्र आवश्यक है। ये सभी नियम हवनकर्त्ता के लिए पालनीय हैं।

आहुति 'स्वाहा' कहते हुए दी जानी चाहिए। स्वाहा कहकर दी हुई आहुति भगवान विष्णु एवं देवताओं को समर्पित होती है।

निवेदक

-कृष्णानन्द आचार्य

सन्ध्या (वृहन्नवण)

श्री गुरु जम्भेश्वर प्रणीतम्

विसंन-2 तूं भणि रे प्राणी, साधां भगतां ऊधरणौ।
देवला सह दानूं दायस्ब दानूं, मदसुदानूं महंमहणौ।
चेतोचित जांणी सारंग पांणी, नादे वेदे निज रहणौ।
आदि विसंन वाराहूँ, दाढां पति धर उधरणौ।
लिछमीं नारायण निहचल थांणौ, थिर रहणौ।
निमोह निपाप निरंजण सांमी,
भणि गोपालू त्रिभूवण तारूं। भणता गुणता पाप खयौ।
तिह तूठै मोख मुगति ज लाभै, अवचल राजूं खाफर खानूं खै गुवणौ।

चीतै दीठै मिरघ तरासै, बांघा रोलै गऊ तरासै, तीर पूल्यै गुण बांण हयौ।
तपति बुझै धारा हरि बूठै यो विसंन जपंता पाप खयौ
ज्यों भूख को पालण अन्न अहारूं, विष को पालन गुरड़ दवारू।
कांही कांही पंखेरवां सींचांण तरासै, विंसन जपंता पाप विणासै।
विसनु ही मन विसनुं भणियो, विसनु ही मन विसनु रहियौ।
इकवीस कोड़ि बैकुण्ठ पहोता, साचै सतगुरू को मंत्र कहियौ।

-: इति सन्ध्या मन्त्र सम्पूर्णम् :-

नोट *:- प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में इकवीस ही लिखा हुआ है। यह सन्ध्या मन्त्र प्राचीन हस्तलिखित से लिया गया है तथा यह ठीक भी है। किन्तु नवीन प्रेस से छपी हुई प्रतियों में इकवीस की जगह ''तेतीस'' पद भी मिलता है। अब आप जैसा ठीक समझें वैसा ही उच्चारण करें।*

अथ गोत्रचार प्रारम्भ

ओ३म् जदूवासरूपम् पूज्यत्रम् सामनिधिम्। गुणनिधिम्। आकाश पितरम्। सतारामम्। पंचम पाताल मुखम्। वरूण ते शिव मुखम् ।।१।। श्रीपार्वत्युवाच- कस्मिन्मासे। कस्मिन् पक्षे। कस्मिन् तिथौ। कस्मिन्वासरे। कस्मिन् नक्षत्रे। कस्मिन् लग्ने। उत्पन्नौऽसौ।।२।। श्री महादेवउवाच।। आषाढ़ मासे, कृष्ण पक्षे, अर्द्धरात्रौ, मीन लग्ने, चतुर्दश्यां शनिवासरे, रोहिणी नक्षत्रे, ऊर्ध्वमुखे, दृष्टपाताले, अगोचरन्नामाग्निः।।३।। श्री पार्वत्युवाच।। कातस्य माता क्वतस्य पिता क्वतस्य गोत्रः, कति जिह्वा प्रकाशित।।४।। श्रीमहादेव उवाच। अरणस माता वरुणष्पिता, शाण्डिल्यगोत्रे, वनस्पति पुत्रम्, पावकनामकम्, वसुन्धरम्।।५।। चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासो अस्य। त्रिधावद्धो वृषभोरोरवीति महोदेवोमर्त्यां

आविवेश।।६।। निखिलब्रह्माण्डमुदरे यस्य द्वादश लोचनम्। सप्त जिह्वा।।७।। काली कराली च मनोजवा च सुलोहिता या च सुधूम्रवर्णा स्फुलिङ्गिनी विश्वरूपी च देवी लेलायमाना इति सप्तजिह्वा।।८।। प्रथमस्तु घृतम्। द्वितीये यवम्। तृतीये तिलम्। चतुर्थे दधि। पञ्चमे क्षीरम्। षष्ठे श्रीखंडम्। सप्तमे मिष्टान्नम्। एतानि सप्तअग्नेर्भोजनानि। एतैः सप्तजिह्वा प्रकाश्यन्ते।।९।। ऊर्ध्वमुखा धोमुखाभिमुखैः साहाय्यङ्करोति। घृत-मिष्टान्नादि पदार्थाः महाविष्णुमुखे प्रविशन्ति। सर्वे देवा ब्रह्मा विष्णुः महेश्वरादयस्तृप्यन्ति।।१०।।

मन्त्र ऋग्वेद

अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्न धातमम्।।१।। अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीडयो नूतनै रुत स-देवां एह वक्षति।।२।। अग्निना रयिमश्नवत्पौषमेव दिवे दिवे। यशसं वीर वत्तमम्।।३।। अग्नेयं यज्ञ मध्वरं विश्वतः परिभूरसि। स इद्देवेषुगच्छति।।४।। अग्निर्होताकविक्रतुः सत्यश्चित्रश्रवस्तमः देवोदेवेभिरागमद्।।५।। यदंगदाशुषे त्वमग्नेभद्रंकरिष्यसि। तवेत्तत्सत्यमंगिरः।।६।। उपत्वाग्ने दिवे दिवे दोषावस्त र्धिया वयम्। नमोभरंत एमसि।।७।। राजंतमध्वराणां गोपामृतस्यदीदिविम् वर्धमानंस्वेदमे।।८।। स नः पितेव सूनवे अग्नेसूपायनो भव सचस्वा नः स्वस्तये।।९।।

वेदों के मन्त्र

ओ३म् शन्नो मित्र: शं वरुण: शन्नो भवत्वर्य मा। शन्न इन्द्रो बृहस्पति: शन्नो विष्णु रुरूक्रम:।।१।।

ओ३म् नमो ब्रह्मणे नमस्ते वायो त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु मामवतु वक्तारम्।।२।।

यथे मां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य: ब्रह्म राजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।।३।।

ओ३म् वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्ष:।।४।।

ओ३म् सा विश्वायु: सा विश्वकर्मा सा विश्वधाया इन्द्रस्यत्वा भाग सोमेना तनच्मि विष्णो हव्यरक्ष।।५।।

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।।यजु०।।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। (चतुर्षु वेदेषु समानो मन्त्रः।)

-0-0-0-

अथ प्रातः सायंकाल के होम मन्त्रः

ओं अग्नये स्वाहा।।१।। ओं सोमाय स्वाहा।।२।। ओं प्रजापतये स्वाहा।।३।। ओं इन्द्राय स्वाहा।।४।।

ओं सूर्य्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।।१।। ओं सूर्य्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः

स्वाहा।।२।। ओं ज्योति: सूर्य्य: सूर्य्यो ज्योति स्वाहा।।३।। ओं सजूर्द्देवेन सवित्रा, सजूरुषसेन्द्रवत्या। जुषाण सूर्योवेत्तु स्वाहा।।४।।

ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि स्वाहा।।१।। ओं अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्च: स्वाहा।।२।। ओं अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्नि: स्वाहा।।३।। ओं सजूर्द्देवेन सवित्रा, सजू रात्र्येन्द्रवत्या। जुषाणों अग्निर्वेत्तु स्वाहा।।५।।

ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।।१।। ओं भुवर वायवेऽपानाय स्वाहा:।।२।। ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।।३।। ओं भूर्भुव: स्वरग्निवाय्वादित्येभ्य: प्राणापानव्यानेभ्य: स्वाहा।।४।। ओं आपो ज्योतिरसोऽमृतं ब्रह्म भूर्भुव: स्वरों स्वाहा।।५।। ओं यां मेधां देवगणां पितरश्चोपासते। तया मामद्य मेधयाऽग्ने मेध ाविनं कुरु स्वाहा।।६।। ओं विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव स्वाहा।।७।।

!! श्री गुरु जम्भेश्वराय नमः !!

सबदवाणी प्रारम्भ

सबद-1

ओ३म् गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित। गुरु मुख धर्म बखाणीं।। जो गुरु होयबा सहजे शीले सबदे नादे वेदे तिहिं गुरु का आलिंकार पिछाणी।। छव दरशण जिहिं कै रूपण थापण, संसार बरतण निज कर थरप्या। सो गुरु प्रत्यक्ष

जाणी।। जिहिं कै खर तर गोठ निरोत्तर वाचा। रहिया रूद्र समाणी। गुरु आप संतोषी अवरां पोखी। तंत महारस बाणी।। के के अलिया बासण होत हुताशण। तामैं खीर दुहीजूँ।। रसूवन गोरस घीय न लीयूं। तहां दूध न पाणी।। गुरु ध्याईये रे ज्ञानी तोड़त मोहा। अति खुरसांणी छीजत लोहा। पांणी छल तेरी खाल पखाला। सतगुरु तोड़े मन का साला।। सतगुरु है तो सहज पिछाणी। कृष्ण चरित बिन काचै करवै रह्यो न रहसी पांणी।।१।।

सबद-2

ओ३म् मोरे छाया न माया लोही न माँसूँ। रक्तूँ न धातूँ, मोरे माई न बापूँ। आपण आपू, रोही न रापूँ, कोपूँ न कलापूँ, दुःख न सरापूँ।। लोई अलोई। त्यूँह तूलोई। ऐसा न कोई जपां भी सोई।। जिहिं जपे आवागवण न होई।। मोरी आद न जाणत। महीयल धूँवा बखाणत।। उरध ढाकले तूसूलूँ। आद अनाद तो हम रचीलो, हमे सिरजीलो सै कोण।। म्हे जोगी कै भोगी कै अल्प अहारी ज्ञानी कै ध्यानी, कै निज कर्म धारी।। सोखी कै पोखी।

कै जल बिंब धारी, दया धर्म थापले निज बाला ब्रह्मचारी।।२।।

सबद-3

ओ३म् मोरै अंग न अलसी तेल न मलियो। ना परमल पीसायों।। जीमत पीवत भोगत बिलसत दीसां नाहीं। म्हापण को आधारूं।। अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर। बाहर लोका चारूं। नान्हीं मोटी जीया जूँणी। एती सास फुरंतै सारूं।। बासंदर क्यूँ एक भणीजै। जिहिं कै पवन पिराणों।। आला सूका मेल्है नाहीं। जिहिं दिश करै मुहाणों।। पापे गुन्हे वीहै

नाहीं। रीस करै रीसाणों।। बहूली दौरे लावण हारूं। भावै जाण मैं जाणूं।। न तूं सुरनर, न तू शंकर। न तू राव न राणों।। काचै पिंड अकाज चलावै महा अधूरत दाणों। मौरे छुरी न धारूं लोह न सारूं न हथियारूं। सूरज को रिप बिहंडा नाहीं, तातै कहां उठावत भारूं।। जिहिं हाकणड़ी बलद जू हाकै न लोहै की आरूं।।३।।

सबद–4

ओ३म् जद पवन न होता पाणी न होता। न होता धर गैणारूं।। चंद न होता सूर न होता। न होता गिगं दर

तारूं।। गऊ न गोरू माया जाल न होता न होता हेत पियारूं।। माय न बाप न बहण न भाई साख न सैंण न होता। न होता पख परवारूं।। लख चौरासी जीया जूणी न होती। न होती वर्णी अठारा भारू।। सप्त पताल फुँणीद न होता। न होता सागर खारूं।। अजिया सजिया जीया जूणी न होती। न होती कुड़ी भरतारूं।। अर्थ न गर्थ न गर्व न होता। न होता तेजी तुरंग तुखारूं।। हाट पटण बाजार न होता। न होता राज दवारूं।। चाव न चहन न कोह का बांण न होता। तद होता एक निरंजण शिंभू, कै होता धंधू

कारूं।। बात कदो की पूछै लोई। जुग छत्तीस बिचारूं।। ताह परैरे अवर छत्तीसूं। पहला अंत न पारूं।। म्हे तदपण होता अब पण आछै, बल-बल होयसां कह कद कद का करूं विचारूं।।४।।

सबद-5

ओ३म् अइया लो अपरंपर बांणी। म्हे जपां न जाया जीऊं।। नव अवतार नमो नारायण। तेपण रूप हमारा थीयूं।। जती तपी तक पीर ऋषेष्वर। कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं।। खेचर भूचर खेत्रपाला परगट गुप्ता।। कांय

जपीजै तेपण जाया जीऊं।। वासग शेष गुणिंदा फुणिंदा। कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं।। चोषट जोगनि बावन बीरूं। कांय जपीजै तेपण जाया जीऊं। जपां तो एक निरालंभ शिंभु। जिहिं कै माई न पीऊं।। न तन रक्तूँ न तन धातूँ। न तन ताव न सीऊँ। सर्व सिरजत मरत बिवरजत। तासन मूलज लेणा कीयों।। अइयालों अपरंपर बाणी। म्हे जपां न जाया जीऊं।।५।।

सबद-6

ओ३म् भवन-भवन म्हे एकाजोती। चुन-चुन लीया

रतना मोती।। म्हे खोजी थापण होजी नाहीं। खोज लहां धुर खोजूँ।। अल्लाह अलेख अडाल अजोनि स्वयंभू। जिंहि का किसा बिनाणी।। म्हे सरै न बैठा सीख न पूछी। निरत सुरत सब जाणी।। उतपति हिंदू जरणा जोगी। किरिया ब्राह्मण दिल दरवेसां उन मुन मुल्ला अकल मिसलमानी।।६।।

सबद-7

ओ३म् हिंदू होय कै हरि क्यूँ ना जंप्यो। कायं दहदिश दिल पसरायों।। सोम अमावस आदितवारी। कांय काटी बन रायों।। गहण गहंतै, बहण बहंतै। निर्जल ग्यारस मूल

बहंतै। कांयरे मुरखा तैं पालंग सेज निहाल बिछाई।। जा दिन तेरे होम न जाप न तप न किरिया। जान कै भागी कपिला गाई।। कूड़तणों जे करतब कीयो। नातैं लाव न सायों।। भूला प्राणी आल बखाणी। न जंप्यो सुर रायों।। छंँदै कहां तो बहुता भावै। खरतर को पतियायों। हिव की बेलां हिय न जाग्यो। शंक रह्यो कदरायों।। ठाढी बेलां ठार न जाग्यो। ताती बेलां तायों।। बिम्बै बेलां विष्णु न जंप्यों। ताछै का चीन्हों कछु कमायों।। अति आलस भोला वै भूला, न चीन्हो सुररायों।। पारब्रह्म की सुध न जाणीं। तो

नागे जोग न पायों।। परशुराम कै अर्थ न मूवा। ताकीं निश्चै सरी न कायों।।७।।

सबद-8

ओ३म् सुण रे काजी सुण रे मुल्लां। सुण रे बकर कसाई।। किणरी थरपी छाली रोसो। किणरी गाडर गाई।। सूल चुभीजै करक दुहेली। तो है है जायो जीव न घाई।। थे तुरकी छुरकी भिस्ती दावो। खायबा खाज अखाजूँ।। चर फिर आवै सहज दुहावै। तिसका खीर हलाली।। जिसके गले करद क्यूं सारो। थे पढ सुण

रहिया खाली।।८।।

सबद-9

ओ३म् दिल साबत हज काबो नेड़े। क्या उलबंग पुकारो।। भाई नाऊं बलद पियारो। ताकै गलै करद क्यूं सारो।। बिन चीन्हैं खुदाय बिबरजत। केहा मुसलमानो।। काफर मुकर होयकर राह गुमायो।। जोय-जोय गाफल करै धिगाणों।। ज्यू थे पच्छिम दिशा उलबंग पुकारो। भलजे यों चीन्हों रहमाणों।। तो रूह चलंतै पिण्ड पड़ंतै। आवै भिस्त बिमाणों।। चढ़-चढ़ भींते मड़ी मसीतें। क्या उलबंग

पुकारो।। काँहे काजै गऊ बिणासो। तो करीम गऊ क्यूं चारी।। काहीं लीयो दूधूं दहियूं। काहीं लीयों घीयूँ महियूं।। काहीं लीयों हाडू मासूं। काही लीयूं रक्तूं रूहियूं।। सुण रे काजी सुण रे मुल्लां। यामै कौण भया मुरदारूं।। जीवां ऊपर जोर करीजै। अंतकाल होयसी भारूं।।९।।

सबद-10

ओ३म् बिसमिल्ला रहमान रहीम। जिहिंकै सदकैं भीना भीन।। तो भेटीलो रहमान रहीम। करीम काया दिल करणी।। कलमा करतब कौल कुराणों। दिल खोजो

दरबेश भईलो।। तइया मुसलमाणों। पीरां पूरषां जमी मुसल्लां।। कर्तब लेक सलामों। हम दिल लिल्ला तुम दिल लिल्ला। रहम करै रहमाणों।। इतने मिसले चालो मीयां। तो पावो भिस्त इमाणों।।१०।।

सबद–11

ओ३म् दिल साबत हज काबो नेडै। क्या उलबंग पुकारो।। सीने सरवर करो बंदगी। हक्क निवाज गुजारो।। इंहि हेड़ैं हर दिन की रोजी तो इसही रोजी सारो।। आप खुदायबंद लेखो मांगै।। रे बिनही गुन्हैं जीव क्यूं मारो।।

थे तक जाणों तकपीड़ न जाणों। बिन परचैं बाद निवाज गुजारो।। चर फिर आवै सहज दुहावै। जिसका खीर हलाली।। तिसके गले करद क्यूं सारो। थे पढ़ सुण रहिया खाली।। थे चढ़-चढ़ भींते मड़ी मसीते। क्या उलबंग पुकारो।। कारण खोटा करतब हींणा। थारी खाली पड़ी निवाजूं।। किहिं ओजू तुम धोवो आप। किहिं ओजू तुम खंडा पाप।। किहिं ओजू तुम धरो धियान। किहिं ओजू चीन्हों रहमान।। रे मुल्ला मन माहि मसीत निवाज गुजारिये। सुणता ना क्या खरै पुकारियै।। अलख न लखिंयो खलक

पिछाण्यो। चांम कटे क्या हुइयों।। हक्क हलाल पिंछाण्यों नाहीं। तो निश्चै गाफल दोरै दीयों।।११।।

सबद-12

ओ३म् महमद-महमद न कर काजी। महमद का तो विषम बिचारूं।। महमद हाथ करद जो होती। लोहै घड़ी न सारूं।। महमद साथ पयंबर सीधा। एक लख असी हजारूं। महमद मरद हलाली होता। तुम ही भए मुरदारूं।।१२।।

सबद–13

ओ३म् कांयरे मुरखा तैं जन्म गुमायों।। भुंय भारी ले भारूं।। जादिन तेरे होम नै जाप नै तप नै किरिया। गुरु न चीन्हों पंथ न पायों अहल गई जमवारूं।। तांती बेला ताव न जाग्यो। ठाढ़ी बेला ठारूं।। बिंबै बैला विंष्णु न जंप्यो। तातैं बहुत भई कसवारूं।। खरी न खाटी देह बिणाठी। थीर न पवना पारूं।। अहंनिश आवं घटंती जावै। तेरे स्वास सबी कसवारूं।। जां जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। ते नर कुबरण कालू।। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। ते नगरे

कीर कहारूं।। जा जन मंत्र विष्णु न जंप्यो। कांध सहै दुख भारूं।। जा जन मंत्र विष्णु न जंप्यो। ते घण तण करै अहारूं।। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। ताको लोही मांस बिकारूं। जा जन मंत्र विष्णु न जंप्यो। गावैं गाडर सहरे सूवर जन्म-जन्म अवतारूं।। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। ओडां कै घर पोहण होयसी पीठ सहै दुख भारूं।। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। राने बासो मोनी बैसे, ढूके सूर सबारूं।। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। ते अचल उठावत भारूं।। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। ते न उतरिबा

पारूं।। जा जन मन्त्र विष्णु न जंप्यो। ते नर दौरे घुप अंधारूं।। तातैं तंत न मंत न जड़ी न बूंटी। ऊंडी पड़ी पहारूं। विष्णु न दोष किसो रे प्राणी। तेरी करणी का उपकारूं।।१३।।

सबद–14

ओ३म् मोरा उपख्यान वेदूं कण तत भेदूं। शास्त्रे पुस्तके लिखणा न जाई।। मेरा सबद खोजो। ज्यूं सबदे सबद समाई।। हिंरणा दोह क्यूँ हिरण हतीलूँ। कृष्ण चरित बिन क्यूँ बाघ बिडारत गाई।। सुनही सुनहा का जाया।

मुरदा बघेरी बघेरा न होयबा।। कृष्ण चरित बिन। सीचाण कबहीं न सुजीऊं।। खर का सबद न मधुरी बाणी।। कृष्ण चरित बिन, श्वान न कबही गहीरूं।। मुंडी का जाया मुंडा न होयबा। कृष्ण चरित बिन, रीछां कबही न सुचीलूं।। बिल्ली की इन्द्री संतोष न होयबा कृष्ण चरित बिन, काफरा न होयबा लीलूं।। मुरगी का जाया मोरा न होयबा। कृष्ण चरित बिन, भाकला न होयबा चीरूं।। दंत बिवाई जन्म न आई।। कृष्ण चरित बिन, लोहै पड़े न काठ की सूलूं। नीबड़िये नारेल न होयबा। कृष्ण चरित बिन, छिलरे न

होयबा हीरूं।। तूबण नागर बेल न होयबा। कृष्ण चरित बिन, बांवली न केली केलूं। गऊ का जाया खगा न होयबा। कृष्ण चरित बिन, दया न पालत भीलूँ।। सूरी का जाया हस्ती न होयबा। कृष्ण चरित बिन, ओछा कबही न पुरूं।। कागण का जाया कोकला न होयबा। कृष्ण चरित बिन, बुगली न जनिबा हंसू। ज्ञानी कै हृदय प्रमोद आवत, अज्ञानी लागत डांसू।।१४।।

सबद-15

ओ३म् सुरमां लेणा झींणा सबदूँ। म्हे भूल न भाख्या

थूलूं।। सो पति बिरखा सींच प्रांणी। जिहिं का मीठा मूल समूलूँ।। पाते भूला मूल न खोजो। सींचो कांय कु मूलूँ।। विष्णु-विष्णु भण अजर जरीजै। यह जींवन का मूलूँ।। खोज प्रांणी ऐसा बिनाणी। केवल ज्ञानी।। ज्ञान गहीरूं। जिहिं कै गुणे न लाभत छेहूं।। गुरु गेंवर गरबा शीतल नीरूं। मेवा ही अति मेऊं।। हिरदै मुक्ता कमल संतोषी। टेवा ही अति टेऊं।। चढ़ कर बोहिता भव जल पार लंघावै। सो गुरु खेवट खेवा खेहूं।।१५।।

सबद–16

ओ३म् लोहै हूंता कंचन घड़ियों। घड़ियों ठाम सुठाऊं।। जाटा हूंता पात करीलूं। यह कृष्ण चरित परिवाणों।। बेंड़ी काठ संजोगे मिलिया। खेवट खेवा खेहूं।। लोहा नीर किसी बिध तरिबा। उत्तम संग सनेहुं।। विन किरिया रथ बैसैंला। ज्यूं काठ संगीणी लोहा नीर तरीलूं।। नांगड़ भागंड़ भूला महियल। जीव हतै मड़ खाईलो।।१६।।

सबद-17

ओ३म् मोरै सहजै सुन्दर लोतर बाणी। ऐसो भयो मन ज्ञानी।। तइया सासूं। तइया मासूं। रक्तूं रूहीयूं।। खीरूं नीरूं। ज्यूं कर देखूं। ज्ञान अंदेसू। भूला प्राणी कहै सो करणो।। अई अमाणो। तत समाणो। अइया लो म्हे पुरष न लेणा नारी।। सो दत सागर सो सुभ्यागत। भवन-भवन भिखियारी।। भीखी लो भिखियारी लो। जे आदि परमतंत लाधो। जांकै बाद बिराम विरांसो सांसौ। तानै कौन कहसी साहिल्या साधु।।१७।।

सबद-18

ओ३म् जांकुछ-जांकुछ जां कछू न जांणी। नाकुछ-नाकुछ तां कुछ जांणी।। नाकुछ-नाकुछ अकथ कहाणी। नांकुछ-नांकुछ अमृत बाणी। ज्ञानी सोतो ज्ञानी रोवत। पढ़िया रोवत गाहे।। केल करन्ता मोरी मोरा रोवत। जोय-जोय पगां दिखाही।। उरध खैंणी मन उनमन रोवत। मुरखा रोवत धाहीं।। मरणत माघ संघारत खेती। के के अवतारी रोवत राही।। जड़िया बूंटी जे जग जीवै। तो बैदा क्यूं मर जाही।। खोज पिरांणी ऐसा बिनाणीं। नुगरा खोजत

नाहीं। जां कुछ होता ना कुछ होयसी। बल कुछ होयसी ताहीं।।१८।।

सबद-19

ओ३म् रूप अरूप रमूं, पिण्डे ब्रह्मण्डे। घट-घट अघट रहायों। अनन्त जुगां मैं अमर भणी जूं। ना मेरे पिता न मायों।। ना मेरे माया न छाया। रूप न रेखा। बाहर भीतर अगम अलेखा।। लेखा एक निरञ्जन लेसी। जहां चीन्हों तहां पायों।। अड़सठ तीरथ हिरदा भीतर। कोई-कोई गुरुमुख बिरला न्हायों।।१९।।

सबद-20

ओ३म् जां जां दया न मया। तां तां बिकरम कया।। जां जा आव न वैसुं। तां तां सुरग न जैसुं।। जां जां जीव न जोती। तां तां मोख न मुक्ति।। जां जां दया न धर्मू। तां तां बिकर्म कर्मू।। जां जां पाले न शीलूं। तां तां कर्म कुचीलू।। जां जां खोज्या न मूलूं। तां तां प्रत्यक्ष थूलूं।। जां जां भेद्या न भेदू। तो सुरगे किसी उमेदूं।। जां जां घमण्डै स घमण्डू। ताकै तावन छायों। सूतै सास नसायों।।२०।।

सबद-21

ओ३म् जिहिं कै सार असारूं। पार अपारूं। थाघ अथाघूं। उमग्या समाघूं।। ते सरवर कित नीरूं। बाजालो भल बाजालो। बाजा दोय गहीरूं।। एकण बाजै नीर बरसै। दूजै मही बिरोलत खीरूं।। जिहि कै सार असारू। पार अपारूं।। थाघ अथाघूं। उमग्या समाघू।। गहर गंभीरूं। गगन पयाले।। बाजत नादूं माणक पायो।। फेर लुकायो। नहीं लखायो।। दुनियां राती बाद विवादूं। बाद बिवादे दांणू खीणा।। ज्यूं पहूपे खींणा भंवरी भंवरा। भावैं जाण म

जाण पिराणी।। जोलै का रिप जंवरा। भेर बाजातो एक जोजनो अथवा तो दोय जोजनो। मेघ बाजातो पंच जोजनो।। अथवा तो दश जोजनो। सोई उत्तम लेरे प्राणी।। जुगां जुगांणी सत करि जांणी। गुरु का सबद ज्यूं बोलो झींणी बाणी।। जिहि का दूरां हूंतै दूर सुणीजै। सो सबद गुणा कारूं।। गुणा सारूं बले अपारूं।।२१।।

सबद-22

ओ३म् लो लो रे राजिंदर रायों। बाजै बाव सुवायों।। आभै अमी झुरायों। कालर करसण कीयों।। नेपै कछू न

कीयों। अइया उत्तम खेती।। को को इमृत रायो। को को दाख दिखायों।। को को ईख उपायों। को को नींब निबोलीं। को को ढाक ढकोली।। को को तूषण तूंबण बेली। को को आक अकायों।। को को कछू कमायों। ताका मूलू कुमूलू।। डाल कुडालूं। ताका पात कुपातूं। ताका फल बींज कुबीजूं। तो नीरे दोष किसायों।। क्यूं क्यूं भएभागे ऊंणा। क्यूं क्यूं कर्म बिहूंणा।। को को चिड़ी चमेड़ी। को को उल्लू आयों।। ताकै ज्ञान न जोती। मोक्ष न मुक्ती।। याके कर्म इसायों। तो नीरे दोष किसायों।।२२।।

सबद–23

ओ३म् साल्हिया हुवा मरण भय भागा। गाफिल मरणै घणा डरै।। सतगुरु मिलियो सत पंथ बतायो। भ्रान्त चुकाई। मरणै बहु उपकार करै।। रतन काया सोभंति लाभै। पार गिराये जीव तिरै।। पार गिराये सनेही करणी। जंपो विष्णु न दोय दिल करणी।। जंपो विष्णु न निंदा करणी। मांडो कांध विष्णु कै सरणै।। अतरा बोल करो जे साचा। तो पार गिरायं गुरु की बाचा।। रवणां ठवणां चवरां भवणां। ताहि परे रै रतन काया छै।। लाभै किसे

विचारे। जे नवीये नवणीं।। खवीये खवणी, जरिये जरणी। करिये करणी। तो सीख हुवां घर जाइये। रतन काया सांचे की ढोली।। गुरु प्रसादे केवल ज्ञाने। धर्म अचारे। शीले संजमे। सतगुरु तूठे पाइये।।२३।।

सबद–24

ओ३म् आसण बैसण कूड़ कपट्टण। कोई कोई चींन्हत वोजू बाटे। वोजू बाटे जे नर भया। काचीं काया छोड़ कैलाशे गया।।२४।।

सबद–25

ओ३म् राज न भूलीलो। राजेन्द्र दुनी न बंधै मेरूं।। पवणा झोलै बीखर जैंला। धुंवर तणाजैं लोरूं।। वोलस आभै तणा लहलोरूं। आडा डम्बर केती बार बिलम्बण यो संसार अनेहूं।। भूला प्राणी विष्णु न जंप्यो। मरण विसारो केहूं।। म्हां देखंता देव दाणूँ सुर नर खीणा। जंबू मंझे राचि न रहिबा थेहूं।। नदिये नीर न छींलर पाणी। धूंवर तणा जे मेहूं।। हंस उड़ाणों पंथ बिलंब्यो आसा सास निरास भईलो।। ताछै होयसी रंड निरंडी देहूं। पवणा झोलै बीखर जैला गैंण बिलंबी खेहूं।।२५।।

सबद-26

ओ३म् घण तण जीम्या को गुण नाहीं। मल भरिया भण्डारूं।। आगै पीछै माटी झूलै। भूला बहैज भारूं।। घणा दिना का बड़ा न कहिबा। बड़ा न लंघिबा पारूं। उत्तम कुली का उत्तम न होयबा। कारण किरिया सारूं।। गोरख दीठां सिद्ध न होयबा पोह उतरबा पारूं।। कलजुग बरतै चेतो लोई। चेतो चेतण हारूं।। सतगुरु मिलियो सत पंथ बतायो। भ्रांत चुकाई बिद गारातैं उदगा गारूं।।२६।।

सबद–27

ओ३म् पढ़ कागल वेदू शास्त्र सबदूं। पढ़ सुन रहिया कछु न लहिया।। नुगरा उमग्या काठ पखाणो कागल पोथा ना कुछ थोथा ना कुछ गाया गीऊं।। किण दिश आवै किण दिश जावै। माई लखै न पीऊं।। इंडे मध्ये पिण्ड उपन्ना, पिण्डा मध्ये बिम्ब उपन्नां, किण दिस पैठा जीऊं। इंडे मध्ये जीव उपन्ना।। सुण रे काजी सुण रे मुल्ला। पीर ऋषिश्वर रेमस वासी तीरथ वासी किण घट पैठा जीऊं।। कंसा सबदे कंस लुकाई बाहर गई न रीऊं।। क्षिण आवै

क्षिण बाहर जावै। रूत कर बरसत सीऊं।। सोवन लंक मंदोदर काजै। जोय-जोय भेद विभीषण दीयों।। तेल लियो खल चोपै जोगी। तिहिंको मोल थोड़े रो कीयों।। ज्ञाने ध्याने नादे वेदे जे नर लेणा। तत भी ताही लीयों।। करण दधीचि सिंवर बल राजा। हुई का फल लीयों।। तारादे रोहितास हरिचन्द। काया दशबन्ध दीयों।। विष्णु अजंप्या जनम अकारथ। आके डोडा खीपे फलीयो।। काफर बिबरजत रूहीयूं। सेंतू भांतू बहु रंग लेणा। सब रंग लेणा रूहीयूं।। नानारे बहु रंग न राचै काली ऊंन कुजीऊं।।

पाहे लाख मजींठी राता।। मोल न जिहिं का रूहीयूं।। कब हीं वो ग्रह ऊथरि आवै। शैतानी साथे लीयों।। ठोठ गुरु वृष लीपति नारी। जद बंकै जद बीरूं।। अमृत का फल एक मन रहिबा। मेवा मिष्ट सुभायों।। अशुद्ध पुरूष वृष लीपति नारी। बिन परचे पार गिराय न जाई।। देखत अन्धा सुणता बहरा। तासों कछु न बसाई।।२७।।

सबद-28

ओ३म् मच्छी मच्छ फिरै जल भीतर। तिहिं का माघ न जोयबा।। परम तंत है ऐसा। आछै उरबार न ताछै

पारूं।। ओवड़ छेवड़ कोई न थीयों। तिहिं का अन्त लहीबा कैसा।। ऐसा लो भल ऐसालो। भल कहो न कहा गहीरूं।। परम तंत कै रूप न रेखा। लीक न लेहूं खोज न खेहूं।। बर्ण बिबरजत। भावैं खोजो बांवन बीरू।। मीन का पंथ मीन ही जांणै। नीर सुरंगम रहीयूं।। सिध का पंथ कोई साधू जाणत। बीजा बरतन बहियों।।२८।।

सबद-29

ओ३म् गुरु कै सबद असंख्य प्रबोधी। खारसमंद परीलो।। खारसमंद परै परेरै। चोखडं खारूं पहला अन्त

न पारूं।। अनन्त कोड़ गुरु कीं दावण बिलम्बी। करणी साच तरीलो।। सांझे जमों सबेरे थापण। गुरु की नाथ डरीलो।। भगवीं टोपीं थल शिर आयो। हेत मिलाण करीलो।। अंबाराय बधाई बाजै। हृदय हरि सिंवरीलो। कृष्ण मया चोखंड कृषाणी। जम्बू दीप चरीलो।। जम्बूदीप ऐसो चर आयो। इसकन्दर चेतायो।। मान्यो शील हकीकत जाग्यो। हक की रोजी धायों।। ऊंनथ नाथ कुपह का पोहमा आंण्या। पोहका धुर पहुंचायों।। मोरै धरतीं ध्यान बनस्पति बासो। ओजू मंडल छायों।। गीदूं मेर पगांणै परबत। मनसा

सोड़ तुलायों।। ऐ जुग चार छतींसां और छतीसां। आश्रा बहै अंधारी, म्हे तो खड़ा बिहायों।। तेतीसां की बरग बहां म्हे। बारां काजै आयों।। बारा थाप घणा न ठाहर मतांतो डीले-डीले कोड़ रचायों।। म्हे ऊंचै मण्डल का रायों। समन्द बिरोल्यो वासग नेतो। मेर मथांणी थायों।। संसा अर्जुन मार्‌यो कारज सार्‌यो। जब म्हे रहस दमामा बायो।। फेरीं सींत लई जद लंका। तद म्हे ऊथे थायों। दह सिर का दश मस्तक छेद्या। बाण भला निरतायों।। म्हे खोजी थापण होजी नाही। लह-लह खेलत डायों।। कंसा सुरसूँ

जूवै रमियां। सहजे नन्द हरायों।। कूंत कुंवारी कर्ण समानो। तिहिंका पोह पोह पड़दा छायों।। पाहे लाख मजींठी पाखो। बन फल राता पींझू पाणी के रंग धायों।। तेपण चाखन चाख्या। भाखन भाख्या। जोय-जोय लियो फल फल केर रसायों।। थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या न चीन्हों सुर रायों।। कण बिन कूकस कांय पीसो। निश्चै सरी न कायो।। म्हे अबधू निर पख जोगी। सहज नगर का रायों।। जो ज्यूं आवै सो त्यूं थरपां। साचा सूं सत भायों। मोरै मनहीं मुद्रा तनहीं कंथा। जोग मारग सहडायों।। सात शायर म्हे

कुरलै कीयों। ना मैं पीया न रह्या तिसायों।। डाकण शाकण निंद्रा खुध्या ये म्हारै तांबै कूप छिपायो।। म्हारै मनहीं मुद्रा तनही कंथा। जोग मारग सह लीयो।। डाकण शाकण निंद्रा खुध्या। ऐ मेरे मूल न थीयों।।२९।।

सबद-30 (कुंचीवाला)

ओ३म् आयो हंकारो जीवड़ो बुलायो। कह जिवड़ा के करण कमायो? थरहर कंपै जिवड़ो डोलै उत माई पीव न कोई बोलै।। सुकरत साथ सगाई चालै। स्वामी पवणा पाणी नवण करंतो।। चंदे सूरे शीस निवन्तो। विष्णु सुरां

पोह पूछ लहन्तो।। इहिं खोटे जन मन्तर स्वामी। अहनिश तेरो नाम जपंतो।। निगम कमाई मांगी मांग। सुरपति साथ सुरा सू रंग।। सुरपति साथ सुरां सूं मेलो। निज पोह खोज ध्याइये।। भोम भली कृषाण भी भला। बूठो है जहां बाहिये।। करषण करो सनेही खेती। तिसिया साख निपाइये।। लुणचुण लीयो मुरा तब कीयो।। कण काजै खड़ गाहिंये।। कणतुस झेड़ो होय नवेड़ो। गुरुमुख पवण उड़ाइये।। पवणा डोलै तुस उडैलो। कणले अर्थ लगाइये।। यूं क्यू भलो जे आप न जरिये।। औरां अजर जराइये।।

यूं क्यूं भलो जे आप न फरिये। अवरां अफर फराइये।। यूं क्यूं भलो जे आप न डरिये। अवरां अडर डराइये।। यूं क्यूं भलो जे आप न मरिये। अवरा मारण धाइये।। पहलै किरिया आप कमाइये। तो औरां न फरमाइये।ं जो कुछ कीजै मरणै पहले। मत भल कहि मर जाइये।। शौच स्नान करो क्यूं नाहीं। जिवड़ा काजै न्हाइये।। शौच स्नान कियो जिन नाहीं। होय भंतूला बहाइये।। शील बिबरजित जीव दुहेलो। यमपुरी ये संताइये।। रतन काया मुख सूवर बरगो। अबखल झंखे पाइये। सवामण सोनो करणे पाखो। किण

पर वाह चलाइये। एक गऊ ग्वाला ऋषि मांगी। करण पखो किण सुरह सुबच्छ दुहाइये। करण पखो किण कंचन दीन्हों। राजा कवन कहाइये।। रिण ऋध्ये स्वामी करण पाखो। कुण हीराडसन पुलाइये। किहिं निश धर्म हुवै धुर पूरो। सुर की सभा समाइये।। जे नविये नवणी खविये खवणीं। जरिये जरणी। करिये करणी। तो सीख हुयां घर जाइये।। अहंनिश धर्म हुवै धुर पूरो। सुर की सभा समाइये।। किहिं गुण बिदरो पार पहूंतो। करणै फेर बसाइये।। मन मुख दान जु दीन्हों करणै। आवागवण जु आइये।। गुरुमुख दान जु दीन्हों

बिदरै। सुर की सभा समाइये।। निज पोह पाखो पार असी पुर। जाणी गीत बिवाहे गाइये।। भरमी भूला वाद विवाद। आचार बिचार न जाणत स्वाद। कीरत के रंग राता मुरखा मन हठ मरै। ते पार गिराये कित उतरै।।३०।।

सबद-31

ओ३म् भल मूल सींचो रे प्राणी। ज्यूं का भल बुद्धि पावै।। जामण मरण भव काल जु चूकै। तो आवा गवण न आवै।। भल मूल सींचो रे प्राणी। ज्यूं तरवर मेलत डालूं। हरि परि हरि की आण न मानी। झंख्या झूल्या

आलूं।। देवा सेवा टेव न जांणी। न बंच्या जम कालू। भूलै प्राणी विष्णु न जंप्यो मूल न खोज्यो। फिर-फिर जोया डालूं।। बिन रैणायर हीरे नीरे। नग न सीपे तके न खोला नालूं।। चलन चलंतै। बास बसंतै। जीव जिवंतै।। सास फुरंतै काया निवंती। कांय रे प्राणी विष्णु न घाती भालूं।। घड़ी घटंतर पहर पटंतर। रात दिनंतर। मास पखंतर। क्षिण ओल्हरबा कालूं।। मीठा झूठा मोह बिटंबण। मकर समाया जालूं।। कबही को बाइंदो बाजत लोई। घड़िया मस्तक तालूं।। जीवां जूणी पड़ै परासा। ज्यूं झींवर मच्छी मच्छा

जालूं।। पहले जिंवड़ो चेत्यो नाहीं। अब ऊंडी पड़ी पहारूं।। जीवर पिंड बिछोड़ो होयसी। ता दिन थाक रहै सिर मारूं।।३१।।

सबद–32

ओ३म् कोड़ गऊ जे तीरथ दानों। पंच लाख तुरंगम दानों।। कण कंचन पाट पटंबर दानों। गज गेंवर हस्ती अति बल दानों।। करण दधीच सिंवर बल राजा। श्रीराम ज्यूं बहुत करै आचारूं।। जां जां बाद विवादी अति अहंकारी लबद सवादी। कृष्ण चरित बिन नाहिं उतरिबा पारूं।।३२।।

सबद-33

ओ३म् कवण न हुवा कवण न होयसी। किण न सह्या दुख भारूं। कवण न गइया कवण न जासी। कवण रह्या संसारूं।। अनेक अनेक चलंता दीठा। कलि का माणस कौन विचारूं।। जो चित होता सो चित नाहीं। भल खोटा संसारू।। किसकी माई किसका भाई। किसका पख परवारूं।। भूली दुनिया मर मर जावै। न चीन्हों करतारूं।। विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणीं। बल बल बारम्बारूं।। कसणी कसबा भूल न बहबा। भाग परापति सारूं।। गीता नाद कवीता नाऊं। रंग

फटारस टारूं।। फोकट प्राणी भरमे भूला। भल जे यों चीन्हों करतारूं।। जामण मरण बिगोवो चूकै। रतन काया ले पार पहूंचै। तो आवागवण निवारूं।।३३।।

सबद–34

ओ३म् फुंरण फुंहारे कृष्णी माया। घण बरसंता सरवर नीरे।। तिरी तिरन्तै तीर। जे तिस मरै तो मरियों।। अन्नों धन्नों दूधू दहीयूं। घीऊं मेऊं टेऊं जे लाभंता। भूख मरै तो जीवन ही बिन सरियों।। खेत मुक्त ले कृष्णौ अर्थो। जे कंध हरै तो हरियों।। विष्णु जपन्ता जीभ जु थाकै। तो

जीभड़ियां बिन सरियों। हरि-हरि करता हरकत आवै। तो ना पछतावो करियों।। भीखी लो भिखियारी लो जे आदि परमतत लाधो।। जाकै बाद विराम बिरांसो सांसो। तानै कोण कहसि साल्हिया साधो।।३४।।

सबद-35

ओ३म् बल बल भणत व्यासूं। नाना अगम न आसूं।। नाना उदक उदासूं। बल बल भई निरासूं। गल मैं पड़ी परासूं। जां जां गुरु न चीन्हों। तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलत थूलूं।।३५।।

सबद–36

ओ३म् काजी कथै कुराणों। न चीन्हों फरमाणों।। काफर थूल भयाणों जइया गुरु न चीन्हों।। तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलत थूलूं।।३६।।

सबद–37

ओ३म् लोहा लंग लुहारूं। ठाठां घड़ै ठठारूं।। उत्तम कर्म कुम्हारूं। जइया गुरु न चीन्हों।। तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलत थूलूं।।३७।।

सबद-38

ओ३म् रे रे पिंड स पिंडू। निरघन जीव क्यूं खंडू।। ताछै खंड बिहंडू घड़ीये सै घमंडू।। अइया पंथ कुपंथू। जइया गुरु न चीन्हों तइया सींच्या न मूलूं। कोई कोई बोलत थूलूं।।३८।।

सबद-39

ओ३म् उत्तम संग सुसंगू। उत्तम रंग सुरंगू।। उत्तम लंग सुलंगू। उत्तम ढंग सुढंगू। उत्तम जंग सुजंगू। तातैं सहज सुलीलूं।। सहज सुपंथू। मरतक मोक्ष दवारूं।।३९।।

सबद-40

ओ३म् सप्त पताले तिहूं तूलोके चवदा भवने गगन गहीरे।। बाहर भीतर सर्व निरंतर। जहां चीन्हों तहां सोई।। सतगुरु मिलियों सतपंथ बतायो। भ्रांत चुकाई। अवर न बुझबा कोई।।४०।।

सबद-41

ओ३म् सुण राजेन्द्र सुण जोगेन्द्र। सुण शेषिन्द्र सुण सोफिन्द्र।। सुण काफिन्द्र।। सुण चाचिन्द्र। सिद्धक साध

कहांणी।। झूंठी काया उपजत विणसत। जां जां नुगरे थिती न जांणी।।४१।।

सबद–42

ओ३म् आयसां काहे काजै खेह भकरूड़ो। सेवो भूत मसांणी।। घड़े ऊंधै बरसत बहु मेहा। तिहिंमा कृष्ण चरित बिन पड़यो न पड़सी पाणी। योगी जंगम नाथ दिगम्बर संन्यासी ब्राह्मण ब्रह्मचारीं।। मन हट पढिया पंडित। काजी मुल्ला खेलै आपद वारी।। निश्चै कायूं वायों होयसैं। जे गुरु बिन खेल पसारी।।४२।।

सबद–43

ओ३म् ज्यूं राज गए राजिन्दर झूरै। खोज गए नै खोजी।। लाछ मुई गिरहायत झूरै। अरथ बिहूंणा लोगी। मोर झड़े कृसाण भी झूरें। बिंद गए नै जोगी।। जोगी जंगम जपिया तपिया। जतीं तपी तक पीरूं। जिहिं तुल भूला पाहण तोलै। तिहि तुल तोलन हीरूं।। जोगी सो तो जुग जुग जोगी। अब भी जोगी सोई।। थे कान चिरावो चिरघट पहरो। आयसां यह पाखंड तो जोग न कोई।। जटा बधारो जीव सिंघारो। आयसां इहि पाखंड तो जोग न होई।।४३।।

सबद-44

ओ३म् खरतर झोली खरतर कंथा। कांध सहै दुख भारूं। जोग तणी थे खबर न पाई। कांय तज्या घर बारूं।। ले सूई धागा सीवण लागा। करड़ कसींदि मेखलीयों।। जड़ जटा-धारी लंघै न पारीं। बाद बिबादि बेकरणो।। थे बीर जपो बेताल धियावो। कांय न खोजो ततकणो।। आयसां डंडत डंडू मुंडत मुंडू। मुंडत माया मोह किसो।। भरमी बादी बादे भूला कांय न पाली जीव दयों।।४४।।

सबद–45

ओ३म् दोय मन दोय दिल सिंवी न कंथा। दोय मन दोय दिल पुली न पंथा।। दोय मन दोय दिल कही न कथा। दोय मन दोय दिल सुणीं न कथा।। दोय मन दोय दिल पंथ दुहेला।। दोय मन दोय दिल गुरु न चेला। दोय मन दोय दिल बंधी न बेला। दोय मन दोय दिल रब्ब दुहेला।। दोय मन दोय दिल सूई न धागा।। दोय मन दोय दिल भिड़े न भागा।। दोय मन दोय दिल भेव न भेऊ।। दोय मन दोय दिल टेव न टेऊं।। दोय मन दोय दिल केल

न केला।। दोय मन दोय दिल सुरग न मेला।। रावल जोगी तां तां फिरियो। अण चीन्हैं के चाह्यो।। काँहि काजै दिशावर खेलो। मन हठ सीख न कायों।। थे जोग न जोग्या भोग न भोग्या। गुरु न चीन्हों रायों।। कण विण कूकस कांय पीसो। निश्चय सरी न कायों।। विण पायचिये पग दुख पावै। अबधू लोहै दुखी सकायों।। पारब्रह्म की सुद्ध न जांणी। तो नागे जोग न पायों।।४५।।

सबद-46

ओ३म् जिहिं जोगी के मनही मुद्रा। तनही कंथा पिंडै

अगन थंभायों। जिहिं जोगी की सेवा कीजै। तूठो भव जल पार लंघावै।। नाथ कहावै मर मर जावै। से क्यूं नाथ कहावै।। नान्हीं मोटी जीवा जूंणी। निरजत सिरजत फिर फिर पूठा आवै।। हमहीं रावल हमहीं जोगी। हम राजा के रायों।। जो ज्यूं आवे सो त्यूं थरपां। साचां सूं सत भायो।। पाप न छिपां पुण्य न हारां। करां न करतब लावां बारूं।। जीव तड़ै को रिजक न मेटू। मूवा परहथ सारूं।। दौरै भिस्त विचालै ऊभा मिलिया काम सवारूं।।४६।।

सबद-47

ओ३म् काया कंथा मन जो गूंटो। सींगी सास उसासूं।। मन मृग राखलै कर कृषांणी। यूं म्हे भया उदासूं।। हमहीं जोगी हमहीं जतीं। हमहीं सती हमहीं राख बा चीतूं।। पंच पटण नव थानक साध ले। आद नाथ के भक्तूं।।४७।।

सबद-48

ओ३म् लक्ष्मण लक्ष्मण न कर आयसां। म्हारे साधां पड़ै बिराऊं।। लक्ष्मण सो जिन लंका लीवी रावण मार्‌यो।

ऐसो कियो संग्रामू।। लक्ष्मण तीन भुवन को राजा।। तेरे एक न गाऊं।। लक्ष्मण कै तो लख चौरासी जीया जूणी। तेरे एक न जीऊं।। लक्ष्मण तो गुणवंतो जोगी। तेरैं बाद विराऊं। लक्ष्मण का तो लक्षण नाहीं। शींस किसी बिध नाऊं।।४८।।

सबद-49

ओ३म् अवधू अजरा जार ले। अमरा राख ले। राख ले विन्द की धारणा।। पताल का पाणी आकाश कूं चढ़ायले। भेंटले गुरु का दरशणा।।४९।।

सबद-50

ओ३म् तइया सांसू तइया मांसू। तइया देह दमोई।। उत्तम मध्यम क्यूं जाणीजै? बिबरस देखो लोई।। जाके बाद बिराम बिरासों सांसो सरसा भोला चालै। ताकै भीतर छोत लकोई।। जाकै बाद बिराम बिरांसो सांसो भोलो भागे। ताके मूले छोत न होई।। दिल दिल आप खुदायबंद जाग्यो। सब दिल जाग्यो सोई।। जो जिंदो हज काबै जाग्यो। थल सिर जाग्यो सोई॥ नाम विष्णु कै मुसकल घातै। ते काफर सैतानी।। हिंदू होय कर तीरथ न्हावै।। पिंड

भरावैं। तेपण रह्या इवांणी।। जोगी होय कै मूंड मुंडावै कान चिरावै। गोरख हटड़ी धोकै। तेपण रह्या इवांणी।। तुरकी होय हज काबो धोके। भूला मुसलमाणी।। के के पुरूष अवर जागैला। थल जाग्यो निज बाणी। जिहिं कै नादे वेदे शीले सबदे। लक्षणे अंत न पारूं।। अंजन माहि निरंजन आछै। सो गुरु लक्ष्मण कंवारूं।।५०।।

सबद-51

ओ३म् सप्त पताले भुंय अंतर अंतर राखिलो। म्हे अटला अटलूं।। अलाह अलेख अडाल अजूनी शिंभू।

पवन अधारी पिंडजलूं।। काया भीतर माया आछै। माया भीतर दया आछै। दया भीतर छाया जिहिंकै। छाया भीतर बिंब फलूं।। पूरक पूर पूर ले पौण। भूख नहीं अन जीमत कौंण।।५१।।

सबद-52

ओ३म् मोह मण्डप थाप थाप ले। राख राख ले। अधरा धरूं आदेस बेसूं।। ते नरेसूं। ते नरां अपरं पारूं।। रण मध्ये से नर रहियों। ते नरा अडरा डरूं।। ज्ञान खड़गूं जथा हाथे। कोण होयसी हमारा रिपूं।।५२।।

सबद-53

ओ३म् गुरु हीरा बिणजै लेहम लेहूं। गुरु नै दोष न देणा। पवणा पाणीं जमीं मेहूं। भार अठारैं परवत रेहूं।। सूरज जोती परै परेरै। एती गुरु कै शरणै।। केती पबली अरू जल बिम्बा। नवसै नदी निवासी नाला सायर एती जरणा।। कोड़ निनाणवै राजा भोगी। गुरु कै आखर कारण जोगी।। माया राणी राज तजीलो। गुरु भेटीलो जोग सझीलो। पिंडा देख न झुरणा।। कर कृसाणीं बेफायत संठो। जो जो जीव पिंडै नीसरणा।। आदै पहलू घड़ी अढाई। स्वर्गे पहुंता हिरणी

हिरणा।। सुरां पुनां तेतीसां मेलो। जे जीवन्ता मरणों।। के के जीव कुजीव। कुधात कलोतर बांणी। बादींलो हंकारी लो।। वै भार घणा ले मरणो।। मिनखा रै तैं सूतै सोयो खूलै खोयो। जड़ पाहन संसार बिगोयो।। निरफल खोड़ भिरांति भूला। आसं किसी जा मरणो।। बेसाही अंध पड़यो गल फंध। लियो गल बंध गुरु बरजंतै।। हेलै श्याम सुन्दर कै टोटै। पारस दुस्तर तरणो। निश्चै छेह पड़ेलो पालो।। गोवल बास जू करणो।। गोवल वास कमाय ले जिवड़ा। सो सुरगा पुर लहणा।।५३।।

सबद-54

ओ३म् अरण विवांणे रै रवि भांणै देव दिवांणे। विष्णु पुराणे।। बिंबा बाणे सूर उगाणे। विष्णु बिबाणे कृष्ण पुरांणे। कायं झंख्यो तै आल पिराणी। सुर नर तणीं सबेरूं। इंडो फूटो बेला बरती। ताछै हुई बेर अबेरूं।। मेरे परै सो जोयण बिंबा लोयण। पुरूष भलो निज बांणी।। बांकी म्हारी एका जोती। मनसा सास बिबांणी। को अचारी अचारे लेणा। संजमे शीलै सहज पतीना।। तिहिं अचारी नै चीन्हत कौण। जांकी सहजे चूकै आवागवण।।५४।।

सबद-55

ओ३म् रण घटिये कै खोज फिरन्ता। सुण सेवन्ता खोज हस्ती को पायो।। लूंकड़िये को खोज फिरंता सुण सेवन्ता खोज सुरह को पायो।। मोथड़िये कै गूंढ खणंता सुण सेवन्ता। लाधो थान सुथानो।। रांघड़िये को घाट घड़न्ता सुण सेवन्ता। कंचन सोनो डायों।। हस्ती चड़न्ता गेंवर गुड़न्ता। सुणहीं सुणहां भूंकत कायों।।५५।।

सबद-56

ओ३म् कुपात्र कू दान जु दीयो। जाणै रैंण अंधेरी

चोर जु लीयो।। चोर जु लेकर भाखर चढ़ियो। कह जिवड़ा तैं कैनैं दीयों।। दान सुपाते बीज सुखेते। अमृत फूल फलीजै।। काया कसोटी मन जो गूंटो। जरणा ढाकण दीजै।। थोड़े माहिं थोड़ेरो दींजै। होते नाह न कीजै।। जोय जोय नाम विष्णु के बीजै। अनन्त गुणा लिख लिजै।।५६।।

सबद-57

ओ३म् अति बल दानो सब स्नानो। गऊ कोट जे तींरथ दानो। बहुत करैं अचारूं।। ते पण जोंय जोंय पार न पायो। भाग परापति सारूं। घट ऊंधै बरषत बहु मेहा।

नीर थयों पण ठालूं। को होयसीं राजा दुर्योधन सो। विष्णु सभा मह लाणो।। तिणहीं तो जोय जोय पार न पायो।। अध विच रहीयों ठालूँ।। जपिया तपिया पोह बिन खपिया। खप खप गया इवांणीं।। तेऊ पार पहूंता नाही। ताकी धोती रही अस्मानी।।५७।।

सबद–58

ओ३म् तउवा माण दुर्योधन माण्या। अवर भी माणत माणूं।। तउवादान जू कृष्णीं माया। और भी फूलत दानो। तउवा जाण जू सहस्र झूझया और भी झूझत जाणो।। तउवा

बाणजूं सीता कारण लक्ष्मण खैच्या। और भी खैंचत बाणौ।। जपी तपी तकपीर ऋषीश्वर। तोल रह्या शैतानो।। तिण किण खैंच न सके। शिंभु तणी कमाणू।। तेऊ पार पहूंता नाहीं। ते कीयो आपो भांणो।। तेऊ पार पहूंता नाहीं। ताकीं धोती रही अस्माणो।। बारां काजै हरकत आई। अधबिच मांड्यो थांणो।। नारसिंह नर नराज नरवो। सुराज सुरवो।। नरां नरपति। सुरा सुरपति। ज्ञान न रिंदो। बहुगुण चिन्दो। पहलू प्रहलादा आप पतलीयो। दूजा काजैं काम बिटलीयो।। खेत मुक्त ले पंच करोड़ी।। सो प्रहलादा गुरु

की बाचा बहियों।। ताका शिखर अपारूं।। ताको तो बैकुंठे वासो। रतन काया दे सोंप्या छलत भण्डारूं।। तेऊ तो उरवारे थाणो। अई अमाणो। तत समाणो। बहु प्रमाणो।। पार पहूंचण हारा। लंका के नर शूर संग्रामे घणा बिरांमे।। काले काने भला तिकंट। पहलै जूझ्या बाबर झंट।। पड़ै ताल समंदा पारी। तेऊ रहीया लंकदवारी खेत मुक्तले सात करोड़ी। परशुराम के हुकम जे मूवां।। सेतो कृष्ण पियारा। ताको तो बैकुंठे बासो। रतन काया दे सोंप्या छलत भंडारूं। तेऊ तो उरवारे थाणो।। अई अमाणो। पार पहूंचन हारा।।

काफर खानो बुद्धि भराड़ो। खेत मुक्त ले नव करोड़ी राव युधिष्ठर।। सेतों कृष्ण पियारा। ताकों तों बैकुण्ठे वासों। रतन काया दे सौंप्या छलत भंडारूं। तेऊ तों उरवारे थाणों।। अई अमाणो बहू परमाणों। पार पहूंचन हारा।। बारा काजै हरकत आई। तातै बहुत भई कसवारूं।।५८।।

सबद-59

ओ३म् पढ़ कागल वेदूं शास्त्र सबदूं। भूला भूले झंख्या आलूं।। अहनिश आव घटंती जावै। तेरा सास सबी कसवारूं।। कईया चन्दा कइया सूरूं। कइया काल बजावत

तूरूं।। उर्द्धक चन्दा निरधक सूरूं। सुन घट काल बजावत तूरूं।। ताछै बहुत भई कसवारूं। रक्तस बिन्दु परहस निन्दू। आप सहै तेपण बूझे नही गवारूं।।५९।।

सबद-60

ओ३म् एक दुख लक्ष्मण बंधू हइयों। एक दुख बूढै घर तरणी अइयों।। एक दुख बालक की मां मुइयों। एक दुख औछै को जमवारूं।। एक दुख तूटै सैं व्यवहारूं। तेरे लक्षणे अन्त न पारूं।। सहैन शक्ति भारू। कै तैं परशुराम का धनुष जे पइयो।। कैतैं दाव कुदाव न जाण्यो भइयूं।

लक्ष्मण बाण जे दहशिर हइयों। एतो झूझ हमें नहीं जाण्यो।
जे कोई जाणै हमारा नाऊं।। तो लक्ष्मण ले बैकुण्ठे जाऊं।
तो बिन ऊभा पह प्रधानो।। तो बिन सूना त्रिभुवन थानो।
कहा हुओ जे लंका लइयो।। कहा हुओ जे रावण हइयों।
कहा हुओ जे सीता अइयों।। कहा करूं गुणवन्ता भइयों।
खल कै साटै हीरा गइयो।।६०।।

सबद-61

ओ३म् कैतैं कारण किरिया चूक्यो। कैतै सूरज सामो थूक्यो।। कैतै उभै कांसा मांज्या। कैतैं छान तिणूका

खैच्या।। कैतै ब्राह्मण निवत बहोड्या। कैतैं आवा कोरंभ चोर्‌या। कैतै बाडी का बन फल तोड़या। कैतै जोगी का खप्पर फोड़या।। कैतैं ब्राह्मण का तागा तोड्या। कैतैं बैर बिरोध धन लोड्या।। कैतैं सूवा गाय का बच्छा बिछोड्या। कैतैं चरती पिवती गऊ बिडारी।। कैतैं हरी पराई नारी। कैतै सगा सहोदर मार्‌या।। कैतैं तिरिया शिर खड्ग उभारया। कैतैं फिरतैं दातण कियो।। कैतै रण मैं जाय दों दीयो। कैतैं वाट कूट धन लीयो। किसे सरापे लक्ष्मण हइयूं।।६१।।

सबद-62

ओ३म् नामैं कारण किरिया चूक्यो। नामैं सूरज साम्हो थूक्यो।। नामैं ऊभै कांसा मांज्या। नामैं छान तिणूका खैच्या।। नामैं ब्राह्मण निवत बहोड्या। नामैं आवा कोरंभ चोर्या। नामैं बाडी का बन फल तोड़्या। नामैं जोगी का खप्पर फोड़्या।। नामैं ब्राह्मण का तागा तोड्या। नामैं बैर बिरोध धन लोड्या।। नामैं सूवा गाय का बच्छ बिछोड्या। नामैं चरती पिवती गऊ बिडारी।। नामैं हरी पराई नारी। नामैं सगा सहोदर मार्या।। नामैं तिरिया सिर खड़्ग उभार्या।

नामैं फिरतै दातण कियो।। नामैं रण मैं जाय दों दीयों।।
नामैं वाट कूट धन लीयो।। एक जू ओंगुण रामैं कीयों।।
अण हुंतो मिरघो मारण गइयो।। दूजो औगुण रामै कीयो।
एको दोष अदोषा दीयों।। बनखंड मैं जद साथर सोइयों।
जद को दोष तदो को होइयों।।६२।।

सबद–63

ओ३म् आतर पातर राही रूक्मण। मेल्हा मंदिर भोयो।।
गढ़ सोवनां तेपण मेल्हा। रहा छड़ा सी जोयों।। रात पड़ंता
पाला भी जाग्या। दिवस तपंता सूरू।। ऊन्हा ठाढा पवना

भी जाग्या। घन बरसंता नीरूं।। दुनीतणा औचाट भी जाग्या। के के नुगरा देता गाल गहीरूं। जिहिं तन ऊना ओढण ओंढां। तिहिं ओढंता चीरूं।। जां हाथे जप माली जपां। तहां जपंता हीरूं।। बारा काजै पड्यो बिछोहो। संभल संभल झूरूं। राघो सीता हनवंत पाखों। कोन बंधावत धीरूं।। मागर मणीयां कांच कथीरूं। हीरस हीरा हीरूं।। बिखा पटंतर पड़ता आया। पूरस पूरा पूरूं।। जे रिण राहे सूर गहीजै। जे सुरज सुरा सूरूं।। दुखिया है जे सुखिया होयसैं। करसै राज गहीरूं।। महा अंगीठी बिरखा ओल्हो।

जेठ न ठंडा नीरूं।। पलंग न पोढण। सेज न सोवण कंठ रूलंता हीरूं।। इतना मोह न माने शिंभु। तहीं तहीं सूसीरूं।। घोड़ा चौली बाल गुदाई। श्रीराम का भाई। गुरु की बाचा बहियों।। राघों सीता हनवंत पाखो। दुःख-सुख कांसू कहियों।।६३।।

सबद-64

ओ३म् मैं कर भूला मांड पिराणी। काचै कन्ध अगाजूं।। काचा कंध गले गल जायसैं। बीखर जैला राजों।। गड़ बड़ गाजा कांय बिबाजा। कण बिण कूकस

कांय लेणा। कांय बोलो मुख ताजों। भरमी बादीं अति अहंकारी।। लावत यारी। पशुवां पड़ै भिरान्ति।। जीव विणासै लाहै कारणै। लोभ सवारथ खायबा खाज अखाजों। जो अति काले लेजम काले तेपण खीणा। जिहिं का लंका गढ़ था राजों।। बिन हस्ती पाखर बिन गज गुड़ीयों। बिन ढोंला डूमां लाकड़ीयो।। जाकै परसण बाजा बाजै। सो अपरं पर कांय न जंपो हिंदू मुसलमानों।। डर डर जीव कै काजैं। रावा रंका राजा रांवां।। रावत राजा खाना खोजां। मीरां मुलकां घंघ फकीरां। घंघा

गुरवां सुर नर देवां।। तिमर जू लंगा। आयसां जोयसां।। साह पुरोहितां। मिश्रही ब्यासां रूंखां बिरखां।। आव घंटती। अतरा माहे कूंण विशेषो। मरणत एको माघों।। पशु मुकेरूं लहैन फेरूं। कहे ज मेरूं सब जग केरूं।। साचै सै हर करै घणेरूं। रिण छाणै ज्यूं बीखर जैला। तातैं मेरूं न तेरूं।। विसर गया तै माघूं। रक्तूं नातूं सेतूं धातूं। कुमलावै ज्यूं शागू।। जीवर पिंड बिछोवा होयसी। तादिन दाम दुगाणी।। आडन पैंको रती बिसोवो सीझै नाही। ओपिंड काम न काजूं।। आवत काया ले आयो थो। जातैं

सूको जागो।। आवत खिण एक लाई थी पर जातैं खिणी न लागो।। भाग परापति कर्मा रेखां। दरगैं जबला जबला माघौं।। बिरखे पान झड़े झड़ जायला। तेपण तई न लागूं।। सेत दगधूं कवलज कलीयों। कुललावै ज्यूं शागूं।। ऋतुबशंती आई। और भलेरा शागूं।। भूला तेण गयारे प्राणी। तिहि का खोज न माघूं। विष्णु विष्णु भण लई न साई। सुर नर ब्रह्मा को न गाई।। तातैं जंवर बिन डसीरे भाई। बास बसंतै कीवी न कमाई।। जंवर तणा जमदूत दहैला। तातैं तेरी कहा न बसाई।।६४।।

सबद-65

ओ३म् तउवा जाग जु गोरख जाग्या। निरह निरंजन निरह निरालंब।। जुग छतीसों एकै आसन बैठा बरत्या। अवर भी अबधू जागत जागूं।। तउवा त्यागज ब्रह्मा त्यागा। अवर भी त्यागत त्यागूं।। तउवा भाग जो ईश्वर मस्तक। अवर भी मस्तक भागूं। तउवा सीर जो ईश्वर गौंरी। अवर भी कहियत सीरूं।। तउवा वीर जो राम लक्ष्मण। अवर भी कहियत बीरों। तउवा पाग जो दश शिर बांधी। अवर भी बांधत पागो।। तउवा लाज जो सीता लाजी। अवर भी

लाजत लाजूं।। तउवा बाजा राम बजाया। अवर बजावत बाजूं।। तउवा पाज जो सीता कारण लक्ष्मण बांधी। अवर भी बांधत पाजूं। तउवा काज जो हनुमत सारा। अवर भी सारत काजूं।। तउवा खाग जो कुम्भकरण महरावण खाज्या। अवर भी खावत खागूं। तउवा राज दुर्योधन माण्या। अवर भी माणत राजूं। तउवा राग ज कन्हड़ बांणी। अवर भी कहिये रागूं।। तउवा माघ तुरंगम तेजी। टटू तणा भी माघूं।। तउवा बागज हंसा टोली बुगला टोली भी बागूं।। तउवा नाग उद्यावल कहिये। गरूड़ सीया भी नागूं।। तउवा शागज

नागरबेली। कूकर बगरा भी शागूं।। जां जां शैतानी करै उफारूं तां तां महंत फलियों।। जुरा जम राक्षस जुरा जुरिन्द्र। कंश केशी चंडरूं।। मधु कीचक हिरणाक्ष हिरणाकुस। चक्रधर बलदेऊं।। पावत बासुदेवो मंडलीक कांय न जोयबा।। इहिं धर ऊपर रती न रहीबा रांजू।।६५।।

सबद-66

ओ३म् ऊमाज गुमाज पंज गंज यारी। रहिया कुपहीया शैतान की यारी।। शैतान लो भल शैतान लो। शैतान बहो जुग छायो।। शैतान की कुबध्या न खेती। ज्यूं काल मध्ये

कुचीलू।। बे राही बे किरियावन्त। कुमती दौरै जायसैं। शैतानी लोड़त रलियों। जां जां शैतान करै उफारूं। तां तां महंत न फलियों।। नील मध्ये कुचील करबा।। साध संगिणी थूलूं।। पोहप मध्ये परमला जोती। यूं सुरग मध्ये लीलूं।। संसार में उपकार ऐसा। ज्यूं घण बरसंता नीरूं।। संसार में उपकार ऐसा। ज्यूं रूंही मध्ये खीरूं।।६६।।

सबद-67 *(शुक्ल हंस)*

(शुक्ल स्वच्छ अति शुद्ध हंस, पापों का नाश करने वाले श्री विष्णु जम्भेश गुरु द्वारा उच्चरित सबद)

ओ३म् श्री गढ़ आल मोत पुर पाटण भुंय नागोरी। म्हे ऊंडे नीरें अवतार लीयो।। अठगी ठंगण। अदगी दागण। अगजा गंजण। ऊंनथ नाथन।। अनू नवावन। काहि को मै खैंकाल कीयों।। काहीं सुरग मुरादे देसां। काहीं दौरै दीयूं।। होम करीलो दिन ठावीलो। सहस रचीलो छापर नीबी दूणपूरूं।। गांव सुंदरीयो छीलै बलदीयो। छंदे मन्दे बाल दीयो।। अजम्है होता नागोर बाड़े। रैण थंभे गढ़ गागरणो।। कुं कुं कंचन सोरठ मरहठ। तिलंग दीप गढ गागरणो।। गढ़ दिल्ली कँचन अर दूणायर।। फिर-फिर दुनीयां परखै

लीयों। थटै भवणिया अरू गुजरात। आछो जाई सवा लाख मालवै। परबत मांडू मांही ज्ञान कथूं।। खुरासाण गढ लंका भीतर। गूगल खेऊ पैरठयों।। ईडर कोट उजैणी नगरी। काहिंदा सिंध पुरी विश्राम लीयों।। कांय रे सायरा गाजै बाजै। घुरै घुरहरै करै इवांणी आप बलूं।। किहिं गुण सायरा मीठा होता। किहिं अवगुण हुओ खार खरूं।। जद बासग नेतो मेर मथाणी। समँद बिरोल्यो ढोयऊरू।। रैणायर डोहण पांणी पोहण। असुरां बेधी करण छलूं।। दहशिर नै जद वाचा दीन्हीं। तद म्हे मेल्ही अनंत छलूं।। दहशिर का

दश मस्तक छेद्या। ताणु बाणु लडू कलूं।। सोखा बाणू एक बखाणू। जाका बहु परवाणूं। निश्चय राखी तास बलूं।। राय विष्णु से बाद न कीजै। कांय बधारो दैंत्य कूलूं।। म्हेपण म्हेई थेपण थेई। सा पुरूषा की लच्छ कुलूं।। गाजै गुड़कै से क्यूं वीहै। जेझल जाकी संहस फणूं।। मेरे माय न बाप न बहण न भाई।। साख न सैंण न लोक जणो।। बैकुण्ठे विश्वास बिलम्बण।। पार गिरांये मात खिणू।। विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी। विष्णु भणन्ता अनन्त गुणूं।। सहंसे नावें सहसे ठावें। सहंसे गावै गाजे

बाजे। हीरे नीरे गगन गहीरे।। चवदा भवणे तिहूं तृलोके जम्बू दीपे। सप्त पताले।। अई अमाणो। तत समाणो। गुरु फुर्माणो। बहु परवाणो।। अइयां उइयां निरजत सिरजत। नान्ही मोटी जीया जूंणी। एती सास फूरंतै सारूं।। कृष्णी माया घन बरषंता। म्हे अगिणि गिणूं फूहारूं।। कुण जाणै म्हे देव कुदेवों। कुण जाणै म्हे अलख अभेवों।। कुण जाणै म्है सुर नर देवों। कुण जाणै म्हारा पहला भेवूं।। कुण जाणै म्हे ग्यानी के ध्यानी। कुण जाणै म्हे केवल ज्ञानी।। कुण जाणै म्हे ब्रह्मज्ञानी।। कुण जाणै म्हे ब्रह्मचारी।। कुण

जाणै म्हे अल्प अहारी। कुण जाणै म्हे पुरूष कै नारी।। कुण जाणै म्हे बाद बिबादी। कुण जाणै म्हे लुब्ध सवादी।। कुण जाणै म्हे जोगी कै भोगी। कुण जाणै म्हे आप संयोगी।। कुण जाणै म्हे भावत भोगी। कुण जाणै म्हे लील पती।। कुण जाणै म्है सूम क दाता। कुण जाणै म्हे सती कुसती।। आप ही सूमर आप ही दाता। आप कुसती आपें सती।। नव दाणूँ निरवंश गुमाया कैरव किया फती फती।। राम रूप कर राक्षस हड़िया। बाण कै आगै वनचर जुड़िया। तद म्हें राखी कमल पती।। दया रूप म्हे आप

बखांणा। संहार रूप म्हे आप हती।। सोलै सहंस नव रंग गोपी। भोलम भालम टोलम टालम।। छोलम छालम।। सहजै राखीलो म्हे कन्हड़ बालो आप जती। छोलबीया म्हे तपी तपेश्वर। छोलम कीया फती फती।। राखण मतां तो पड़दै राखां। ज्यूं दाहै पान बणासपती।।६७।।

सबद-68

ओ३म् वै कंवराई अनंत बधाई। वै कंवराई सुरग बधाई।। यह कंवराई खेह रलाई। दुनीयां रोलै कंवर किसो। कण बिण कूकस रस बिन बाकस। बिन किरिया परिवार

किसो।। अरथूं गरथूं साहण थाटूं। धूंवै का लहलोर जिसो।।
सो शारंगधर जपरे प्राणी। जिहिं जपिये हुवै धरम इसो।
चलण चलंतै बास बसंतै। जीव जिवंतै काया नवंती।।
सास फुरंतै किवी न कमाई। तातैं जंवर बिन डसीरे भाई।।
सुर नर ब्रह्मा कोउ न गाई। माय न बाप न बहण न भाई।
इंत न मिंत न लोक जणो। जंवर तणा जमदूत दहेला। लेखो
लेसी एक जणो।।६८।।

सबद–69

ओ३म् जंवरारे तैं जग डांडीलो। देह न जीती जांणो।।

माया जाले ले जम काले। लेणा कोण समाणो। काचै पिंडै किसी बड़ाई। भोलै भूल अयांणो।। म्हां देखतां देव दाणु सुर नर खीणा। बीच गया बेराणो। कुंभकरण महरावण होता। अबली जोध अयाणो।। कोट लंका गढ विषमा होता। कांयदा बस गया रावण राणो।। नौग्रह रावण पाए बन्ध्या।। तिस बीह सुर नर शंक भयाणो।। ले जम कालें अति बुधवंतो। सीता काज लुंभाणो।। भरमी बादी अति अहंकारी।। करता गरब गुमानो।। तेऊ तो जम काले खीणां। थीर न लाधौ थाणो। काचै पिंड अकाज अफारू।

किसी पिराणी माणो।। साबण लाख मजीठ बिगूता। थोथा बाजर घाणो।। दुनिया राचै गाजै बाजै। तामैं कणू न दाणू।। दुनियां के रंग सब कोई राचै।। दीन रचै सो जाणो।। लोही मास बिकारो होयसी। मूर्ख फिरै अयाणो।। मागर मणियां काच कथीरन राचो। कूड़ा दुनी डफाणो।। चलन चलन्तै। जीव जीवन्तै। काया नवन्ती। सास फुरंतै। कांयरे प्राणी विष्णु न जंप्यो। कीयो कन्धै को तांणो।। तिहिं ऊपर आवैला जंवर तणा दल। तास किसो सहनाणौ।। ताकै शीष न ओढण। पाय न पहरण। नैवा झूल झयाणो।।

धणक न बाण न टोप न अंगा। टाटर चुगल चयाणो।। साल सुचंगी घृत सुबासो। पीवण न ठंडा पांणी। सेज न सोवण। पलंग न पोढण। छात न मैड़ी माणो।। न वां दइया न वां मइयां। नागड़ दूत भयाणो।। काचा तोड़ नीकुचा भाषैं। अघट घटैं मल माणो।। धरती अरू असमान अगोचर। जातैं जीव न देही जाणो।। आवत जावत दीसै नाहीं। साचर जाय अयाणो।। जंवर तणां जमदूत दहैला। मल बेसैला मांणो।। तातै कलीयर कागा रोलो। सूना रह्या अयाणो।। आयसां जोयसां भणता

गुणतां। वार महूर्ता पोथा थोथा। पुस्तक पढिया वेद पुराणों।। भूत परेती कांय जपीजै।। यह पाखण्ड परमाणों। कान्ह दिशावर जेकर चालो। रतन काया ले पार पहूंचो। रहसी आवा जाणो।। तांह परेरै पार गिरांये। ततकै निश्चल थाणो।। सो अपरंपर कांय न जंपो। ततखिण लहो इमाणो।। भल मूल सींचो रे प्राणी। ज्यूं तरवर मेलत डालूं।। जइया मूल न सींच्यो। तो जामण मरण बिगोवो।। अहनिश करणी थीर न रहिबा। न बंच्यो जम कालूं।। कोई कोई भल मूल सींची लो। भल तंत बूझीलो।। जा

जीवन की विध जाणी। जीव तड़ा कछु लाहो होसी। मूवा न आवत हांणी।।६९।।

सबद-70

ओ३म् हक हलालूं हक साच कृष्णों। सुकृत अहल्यो न जाई।। भल बाहीलो भल बीजीलो। पवणा बाड़ बलाई।। जीव कै काजै खड़ो ज खेती। तामैं ले रखवालो रे भाई।। दैतानी शैतानी फिरैला। तेरी मत मोरा चर जाई।। उन मुन मनवा जीव जतन कर। मन राखी लो ठांई।। जीव कै काजै खड़ो ज खेती। वाय दवाय न जाई।। न तहां हिरणी न तहां

हिरणा। न चीन्हों हरि आई।। न तहां मोरा न तहां मोरी। न ऊंदर चर जाई।। कोई गुरु कर ज्ञानी तोड़त मोहा। तेरो मन रखवालो रे भाई। जो आराध्यो राव युधिष्ठिर। सो आराधो रे भाई।।७०।।

सबद-71

ओ३म् धवणा धूजै पाहण पूजै। बे फरमाई खुदाई।। गुरु चेले के पाए लागै। देखो लोग अन्यायी।। काठी कणजो रूपा रेहण। कापड़ माह छिपाई।। नीचा पड़ पड़ तानैं धोकै। धीरा रे हरि आई।। ब्राह्मण नाऊं लादण रूड़ा। बूता नाऊं

कूता।। वै अपहानै पोह बतावैं। बैर जगावैं सूता।। भूत परेती जाखा खांणी। यह पाखंड परवाणो।। बल बल कूकस कांय दलीजै। जामै कणूँ न दाणू।। तेल लीयो खल चोपै जोगी। खलपण सूंघी बिकाणो।। कालर बीज न बीज पिराणी। थल सिर न कर निवाणो।। नीर गए छीलर कांय सोधो। रीता रह्या इवाणो।। भवंता ते फिरंता। फिरंता ते भवंता। मड़े मसाणे।। तड़े तड़गे। पड़े पखांणे। हवांतो सिद्धि न काई।। निज पोह खोज पिराणी।। जे नर दावो छोड्यो मेर चुकाई। राह तेतीसों की जाणी।।७१।।

सबद-72

ओ३म् वेद कुराण कुमाया जालूं। भूला जीव कु जीव कु जाणी।। बसंदर नहीं नख हीरूं। धर्म पुरूष सिरजीवै पूरूं।। कलि का मायाजाल फिंटाकर प्राणी। गुरु की कलम कुरांण पिछांणी।। दींन गुमान करैलो ठाली। ज्यूं कण घातै घुण हांणी।। सांच सिदक शैतान चुकावो। ज्यूं तिस चुकावै पांणी।। मै नर पूरा सरविण जो हीरा। लेसी जांकै हृदय लोयण। अंधा रहा इवांणी।। निरख लहो

नर निरहारी। जिन चोखंड भीतर खेल पसारी।। जंपो रे जिण जंपे लाभै। रतन काया ए कहांणी। काही मारूं काहीं तारूं। किरिया बिहूंणा पर हथ सारूं। शील दहूं उबारूं ऊन्है। एकल एह कहांणी।। केवल ज्ञानी थल शिर आयो। परगट खेल पसारी।। कोड़ तेतीसो पोह रचावण हारी। ज्यूं छक आई सारी।।७२।।

सबद–73

ओ३म् हरी कंकेहड़ी मंडप मैड़ी। जहां हमारा वासा।। चार चक नव दीप थरहरै। जो आपो परकासूं।। गुणियां

म्हारा सुगणा चेला। म्हे सुगणा का दासूं।। सुगणा होय सैं सुरगे जास्ये। नुगरा रहा निरासूं।। जा का थान सुहाया घर बैकुण्ठे।। जाय संदेसो लायो।। अमियां ठमियां इमृत भोजन। मनसा पलंग सेज निहाल बिछायों।। जागो जोवो जोत न खोवो। छल जासी संसारूं।। भणी न भणबा। सुणी न सुणबा।। कही न कहबा। खड़ी न खड़बा।। रे भल कृषाणी। ताकै करण न घातो हेलो।। कलीकाल जुग बरते जैंलो तातै नही सुरां सो मेलों।।७३।।

सबद-74

ओ३म् कड़वा मीठा भोजन भख ले। भख कर देखत खीरूं।। धर आखरड़ी साथर सोवण। ओढण ऊना चीरूं।। सहजे सोवण पोह का जागण। जे मन रहिबा थीरूं।। सुरग पहेली सांभल जिवड़ा। पोह उतरबा तीरूं।।७४।।

सबद-75

ओ३म् जोगी रे तू जुगत पिछांणी। काजी रे तू कलम कुरांणी।। गऊ बिणासो काँहे तानी। राम रजा क्यूं दीन्हीं दानी।। कान्ह चराई रनबे वांनी। निरगुन रूप हमें पतियानीं।।

थल शिर रह्या अगोचर बानी। ध्याय रे मुंडिया पर दानी। फीटा रे अण होता तानी। अलख लेखो लेसी जानी।।७५।।

सबद–76

ओ३म् तन मन धोइये संजम हुइये। हरष न खोइये।। ज्यूं ज्यूं दुनिया करै खुवारी। त्यूं त्यूं किरिया पूरी।। मुग्धां सेती यूं टल चालो। ज्यूं खडकै पासि धंनेरी।।७६।।

सबद–77

ओ३म् भूला लो भल भूला लो। भूला भूल न भूलूं।। जिहिं ठूंठडिये पान न होता। ते क्यूं चाहत फूलूं।।

को को कपूर घूंटीलो। बिन घूंटी नहीं जाणी।। सतगुरु होयबा सहजे चीन्हबा। जाचंध आल बखांणी।। ओछी किरिया आवै फिरियां। भ्रांती सुरग न जाई।। अन्त निरंजन लेखो लेसी। पर चीन्हों नहीं लोकाई।। कण बिन कूकस रस बिन बाकस। बिन किरिया परिवारूं।। हरि बिन देहरै जांण न पावै।। अम्बाराय दवारूं।।७७।।

सबद-78

ओ३म् नवै पोल नवै दरवाजा। अहूंठ कोडरूं रायजड़ी।। कांयरे सींचो बनमाली। इंहि बाड़ी तो भेल

पड़सी।। सुबचन बोल सदा सुहलाली। नाम विष्णु को हरे सुणो।। घण तण गड़बड़ कायों वायों। निज मारग तो बिरला कायों।। निज पोह पाखो पार असी पर। जाण म गाहि म गायो गूंणो।। श्रीराम में मति थोड़ी। जोय जोय कण विण कूकस कायों लेणो।।७८।।

सबद-79

ओ३म् बारा पोल नवै दरसाजी। राय अथरगढ थीरूं।। इस गढ कोई थीर न रहिबा। निश्चै चाल गया गुरु पीरूं।।७९।।

सबद-80

ओ३म् जे म्हां सूता रैण बिहावै। तो बरतै बिम्बा बारूं।। चन्द भी लाजै सूर भी लाजै। लाजै धर गैणारूं।। पवणा पांणी येपण लाजै। लाजै बणी अठारा भारूं।। सप्त पताल फुणीदा लाजै। लाजै सागर खारूं।। जंबूदीप का लोइया लाजै। लाजै धवली धारूं।। सिध अरू साधक मुनिजन लाजै। लाजै सिरजण हारूं।। सत्तर लाख असी पर जंपा। भले न आवै तारूं।।८०।।

सबद–81

ओ३म् भल पाखंडी पाखंड मंडा। पहला पाप परा छत खंडा।। जा पाखंडी कै नादे वेदे शीले सबदे बाजत पौण।। ता पाखंडी नै चीन्हत कौण। जांकी सहजै चूकै आवा गौण।।।८१।।

सबद–82

ओ३म् अलख–अलख तू अलख न लखणा। तेरा अनन्त इलोलूं।। कौण सी तेरी करणी पूजै। कौण सैं तिहिं रूप सतूलूं।।८२।।

सबद–83

ओ३म् जो नर घोड़ै चढ़ै पाग न बांधै। ताकी करणी कौण बिचारूं।। शुचियारा होयसी आय मिलसी। करड़ा दोजग खारूं।। जीव तड़े को रिजक न मेटूं। मूवां परहथ सारूं।। हाथ न धोवै पग न पखालै। नाहर सिंघ नर काजूं।। जुग अनंत अनंत बरत्या। म्हे सूनि मंडल का राजूं।।८३।।

सबद–84

ओ३म् मूंड मुंडायो मन न मुंडायो। मूहि अबखल दिल

लोभी।। अन्दर दया नहीं सुरकाने। निंदरा हड़ै कसोभी।। गुरु गति छूटी टोट पड़ैला। उनकी आवा एकपख सातो वै करणी हूंता खूंधा।। असी सहंस नव लाख भवैला कुंभी दौरे ऊंधा।।८४।।

सबद-85

ओ३म् भोम भली कृषाण भी भला। खेवट करो कमाई।। गुरु प्रसाद काया गढ़ खोजो। दिल भीतर चोर न जाई।। थलिये आय सतगुरु परकाश्यो। जोलै पड़ी लोकाई।। एक खिण मांहि तीन भवन म्हे पोखां। जीवां

जूण सवाई।। करण समो दातार न हूवो। जिन कंचन बाहू उठाई।। सोई कवीसा कवल नवेड़ी। जिण सुरह सुबछ दुहाई। मेर समो कोई केर न देख्यो। सायर जिसीं तलाई।। लंक सरीखो कोट न देख्यो। समंद सरीखी खाई।। दशरथ सो कोई पिता न देख्यो। देवल देसी माई।। सीत सरीखी तिरिया न देखी। गरब न करीयों काई।। हनमत सो कोई पायक न देख्यो। भीम जैसी सबलाई।। रावण सो कोई राव न देख्यो। जिण चोहचक आन फिराई।। एक तिरिया कै राहा बेधी। लंका फेर बसाई।। संखा मोहरा सेतम सेतूं।

ताक्यूं बिलगै कांई।। ब्राह्मण था ते बेदे भूला। काजी कलम गुमाई।। जोग बिहूंणा जोगी भूला। मुंडीया अकल न काई।। इहिं कलयुग मैं दोय जन भूला। एक पिता एक माई।। बाप जाणै मेरे हलीयो टोरै। कोहर सींचण जाही।। माय जाणै मेरै बहुटल आवै। बाजै बिरद बधाई।। म्हे शिंभू का फरमाया आया। बैठा तखत रचाई।। दोय भुजडंडे परवत तोलां। फेरां आपण राई।। एक पलक मैं सर्ब संतोषां जीया जूण सवाई।। जूगां-जूगां को जोगी आयो। बैठो आसन धारीं।। हाली पूछै पाली पूछै। यह कलि पूछण

हारी।। थली फिरंतो खिलेरी पूछै। मेरी गुमाई छाली।। बांण चहोड़ पारधियो पूछै। किहिं अवगुण चूकै चोट हमारी।। रहोरे मूर्खा मुग्ध गंवारा। करो मजूरी पेट भराई।। है है जायो जीव न घाई। मैड़ी बैठो राजेन्द्र पूछै। स्वामी जी कती एक आयु हमारी।। चाकर पूछै ठाकर पूछै और पूछै कीर कहारी।। सोक दुहागण तेपण पूछै। ले ले हाथ सुपारी।। बांझ तिरिया बहुतेरी पूछै। किसी परापति म्हारी।। त्रेता जुग मैं हीरा विणज्या। द्वापुर गऊ चराई।। वृन्दावन मैं बंसी बजाई। कलजुग चारीं छाली।। नव खेड़ी म्हें आगै खेड़ी।

दशवैं कालंके की बारी।। उत्तम देश पसारो मांड्यो। रमण बैठो जुवारी।। एक खंड बैठा नवखंड जींता। को ऐसो लहो जुवारी।।८५।।

सबद-86

ओ३म् जुग जागो जुगजाग पिरांणी। कांय जागंता सोवो।। भलकै बीर बिगोवो होयसी। दुसमन कांय लकोवो।। ले कूंची दरबान बुलावो। दिल ताला दिल खोवो।। जंपो रे जिण जंप्यो जणीयर। जपसी सो जिण हारी।। लह-लह दाव पड़ंता खेलो। सुर तेतीसां सारी।।

पवन बंधान काया गढकाची। नीर छलै ज्यूं पारी।। पारी बिनसै नीर ढुलैलो। ओ पिंड काम न कारी।। काची काया दूढ़ कर सींचो। ज्यूं माली सींचै बाड़ी।। ले काया बासंदर होमो। ज्यूं ईंधन की भारी।। शील स्नाने संजमे चालो। पाणी देह पखाली।। गुरु के वचने निंव खिंव चालो। हाथ जपो जपमाली।। वस्तु पियारी खरचो क्यूं नाहीं। किहिं गुण राखो टाली।। खरचे लाहो राखे टोटो। बिबरस जोय निहाली।। घर आगी इत गोवल बासो। कूड़ी आधो चारी।। आज मूवा कल दूसर दिन है। जो कुछ सरै तो सारी।। पीछै

कलीयर कागा रोलो। रहसी कूक पुकारी।। ताण थकै क्यूं हार्‌यो नाहीं। मुरखा अवसर जोला हारी।।८६।।

सबद–87

ओ३म् जिहि का उमग्या समाघूं। तिहिं पंथ के बिरला लागूं।। बीजा चाकर बीरूं। रिण शंख धीरूं।। कबही झूझत रायूं। पासै भाजत भायों।। तातैं नुगरा झूझ न कीयों।।८७।।

सबद–88

ओ३म् गोरख लो गोपाल लो। लाल गवाल लो।।

लाल लीलंग देवों। नवखंड प्रथिवी प्रगटियो।। कोई बिरला जाणत म्हारीं। आद मूल का भेवो।।८८।।

सबद–89

ओ३म् उरधक चन्दा निरधक सूरूं। नव लख तारा नेड़ा न दूरूं।। नव लख चन्दा नव लख सूरूं। नव लख धंधू कारूं।। तांह परेरै तेपण होता। तिहंका करूं बिचारूं।।८९।।

सबद–90

ओ३म् चोईस चेड़ा कालिंग केड़ा। अधिक कलावंत आयसैं।। वै फेर आसन मुकर होय बैसैंला। नुगरा थान

रचायसैं।। जाणत भूला महा पापी। बहू दुनियां भोलायसैं।। दिल का कूड़ा कुड़ीयारा। उपंग बात चलाय सैं।। गुरु गहणा जो लेवै नाहीं। दशबंध घर बोसायसैं।। आप थापी महापापी। दग्धी परलै जायसैं।। सतगुरु कै बैड़ै न चढ़ै। गुर स्वामी नै भाय सैं।। मंत्र बेलु ऋध सिध कर सैं।। दे दे कार चलायसैं।। काठ का घोड़ा निरजीवता सरजीव कर सैं। तांनै दाल चरायसैं। अधर आसण मांड बैसैंला। मूवा मड़ा हंसाय सैं।। जां जां पवन आसण। पाणी आसण चंद आसण। सूर आसण। गुरु आसण संभराथले।। कहै सतगुरु भूल मत जाइयो। पड़ोला अभै दोजखे।।९०।।

सबद-91

ओ३म् छंदे मंदे बालक बुद्धे। कूड़े कपटे ऋध न सिद्धे।। मेरे गुरु जो दीन्हीं शिक्षा। सर्व आलिंगण फेरी दीक्षा।। जाण अजाण बहींया जब जब। सर्व आलिंगण मेटे तब तब।। ममता हस्ती बांध्या काल। काल पर काले पसरत डाल।। ध्यान न डोले मन न टले। अहनिश ब्रह्म ज्ञान उच्चरै। काया पत नगरी मन पत राजा। पञ्च आत्मा परिवारूं।। है कोई आछै मही मंडल शूरा। मनराय सूं झूझ रचायले।। अथगा थगायले। अवसा बसायले। अनबे माघ

पाल ले।। सत-सत भाषत गुरु रायों। जरा मरण भो भागूं।।९१।।

सबद-92

ओ३म् काया कोट पवन कुट वाली। कुकर्म कुलफ बणायो।। माया जाल भरम का संकल। बहु जग रहीया छायों।। पढ़ वेद कुरांण कुमाया जालों। दंत कथा जुग छायो।। सिध साधक को एक मतो। जिन जीवत मुक्त दृढ़ायों।। जुगां जुगां को जोगी आयों।। सतगुरु सिद्ध बतायो।। सहज स्नानी केवल ज्ञानी ब्रह्मज्ञानी। सुकृत

अहल्यो न जाई।। क्यूं क्यूं भणतां। क्यूं क्यूं सुणतां। समझ बिना कुछ सिद्धि न पाई।।९२।।

सबद-93

ओ३म् आद सबद अनाहद बांणी। चवदै भवण रह्या छल पाणी।। जिहिं पाणी से इंड ऊपना। उपना ब्रह्मा इन्द्र मुरारी।।९३।।

सबद-94

ओ३म् सहंस्र नाम सांईभल शिंभु। म्हे उपना आदि मुरारी।। जद मैं रहयो निरालंभ होकर। उतपति धंधुकारी।।

ना मेरै मायन ना मेरै बापन। मैं अपनी काया आप संवारी।। जुग छतीसों शून्यहि बरत्या। सतजुग माहीं सिरजी सारी।। ब्रह्मा इन्द्र सकल जग थरप्या। दीन्ही करामात केतीवारी।। चन्द सूर दोय साक्षी थरप्या। पवन पवनेश्वर पवन अधारी।। तदम्हे रूप कीयो मैनावतीयो। सत्यव्रत को ज्ञान उचारी।। तदम्हे रूप रच्यो कामठीयो। तेतीसों की कोड़ हंकारी।। जब मैं रूप धर्‌यो वाराहीं। पृथिवी दाढ़ चढ़ाई सारी।। नरसिंघ रूप धर हिरण्यकश्यप मार्‌यो। प्रहलादो रहियो शरण हमारी।। बावन होय बलिराज चितायो। तीन पैंड

कीवीं धरसारी।। परशुराम होय क्षत्रियपन साध्यो। गर्भ न छूटी नारी।। श्री राम शिर मुकुट बंधायो। सीता के अहंकारी।। कन्हड़ होय कर बंसी बजाई गऊ चराई।। धरती छेदी। काली नाथ्यो। असुर मार किया क्षयकारी।। बुद्ध रूप गयासुर मार्यो। काफर मार किया बेगारी।। पंथ चलायो राह दिखायो। नौवर विजय हुई हमारी।ं शेष जंभराय आप अपरंपर। अवल दिन से कहियो।। जांभा गोरख गुरु अपारा।। काजी मुल्ला पढ़िया पंडित। निंदा करै गिवारा।। दोजख छोड़ भिस्त जे चाहो। तो कहिया करो हमारा।।

इन्द्रपुरी बैकुण्ठे बासो। तो पावो मोक्षहिं द्वारा।।९४।।

सबद–95

ओ३म् बाद बिवाद फिटाकर प्राणी। छाडो मनहट मन का भाणो।। कांही कै मन भयो अंधेरो। कांही सूर उगाणो।। नुगरा कै मन भयो अंधेरो। सुगरा सूर उगाणो।। चरणभि रहीया लोयण झुरीया। पिंजर पड्यो पुराणो।। बेटा बेटी बहन रू भाई। सबसै भयो अभाणो।ं तेल लियो खल चोपै जोगी। रीता रहीयो घांणो।। हंस उडाणो पंथ बिलब्यो। कीयो दूर पयाणो।। आगै सुरपति लेखो मांगै।

कहि जीवड़ा के करण कमाणो।। जीवड़ा नै पाछो सूझण लागो। सुकरत नै पछताणो।।९५।।

सबद-96

ओ३म् सुण गुणवंता सुण बुधवंता। मेरी उत्पत्ति आदि लुहारूं।। भाठी अंदर लोह तपीलो। तंतक सोना घड़ै कसारूं।। मेरी मनसा अहरण नाद हथोड़ो। शशीयर सूर तपीलो।। पवन अधारीं खालूं। जै थे गुरु का सबद मानीलो। लंघिबा भव जल पारूं।। आसण छोड़ि सुखासण बैठो।। जुग-जुग जीवै जंभ लुहारूं।।९६।।

सबद-97

ओ३म् विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी। जो मन मानै रे भाई।। दिन का भूला रात न चेता। कांय पड़ा सूता आस किसी मन थाई।। तेरी कुड़ काची लगवाड़ घणो छै। कुशल किसी मन भाई।। हिरदै नाम विष्णु को जंपो। हाथे करो टवाई।। हरि परहर की आंण न मानी। भूला भूल जपी महमाई।। पाहन प्रीत फिटा कर प्राणी। गुरु बिन मुक्त न जाई।। पंच क्रोड़ी ले प्रहलाद उतरियो। जिन खर तर करी कमाई। सात क्रोड़ी ले राजा हरिचंद उतरियो। तारादे

रोहिताश हरिचन्द हाटोहाट बिकाई।। नव क्रोड़ी राव युधिष्ठिर ले उतरियो। धन-धन कुन्ती माई।। बारा क्रोड़ समाहन आयो। प्रहलादा सूं वाचा कवल जु थाई।। किसकी नारी बस्त पियारी। किसका बहिन रू भाई।। भूली दुनियां मर मर जावै। ना चीन्हों सुरराई।। पाहण नाऊं लोहा सक्ता। नुगरा चीन्हत कांई।।९७।।

सबद-98

ओ३म् जिहि गुरु कै खिणहीं ताऊं खिणहीं सीऊं। खिणही पवणा खिणहीं पाणी। खिणहीं मेघ मंडाणो।।

कृष्ण करंता बार न होई। थल सिर नीर निवाणो।। भूला प्राणी विष्णु जंपो रे। ज्यूं मौत टलै जिरवाणो।। भीगा है पण भेद्या नाहीं। पांणी मांहि पखाणो।। जीवत मरो रे जीवत मरो। जिन जीवन की बिध जांणी।। जे कोई आवै हो हो कर। आप जै हुईये पांणी।। जाकै बहुती नवणी बहुती खवणी। बहुती क्रिया समाणीं।। जाकी तो निज निर्मल काया। जोय जोय देखो ले चढ़ियो अस्मानीं।। यह मढ देवल मूल न जोयबा। निज कर जपो पिराणी।। अनन्त रूप जोवो अभ्यागत। जिहिंका खोज लहो सुर बाणी।।

सेतम सेतूं। जेरज जेरूं। इंडस इंडू। अइयालो उरध जे खैणी।।९८।।

सबद–99

ओ३म् साच सही म्हे कूड़ न कहिबा। नेड़ा था पण दूर न रहीबा।। सदा सन्तोषी सत उपकरणां। म्हे तजीया मान अभिमानूं।। बस कर पवणा बस कर पाणी। बस कर हाट पटण दरवाजों।। दशे दवारे ताला जड़ीया। जो ऐसा उसताजों।। दशे दवारे ताला कूंची। भीतर पोल बणाई।। जो आराध्यो राव युधिष्ठिर। सो आराधो रे भाई।। जिहिं

गुरु कै झुरैन झुरबा खिरैन खिरंणा। बंक तृबंके।। नाल पै नालै। नैंणे नीर न झुरबा। बिन पुल बंध्या बांणो।। तज्या अलिंगण तोड़ी माया। तन लोचन गुण बांणो।। हालीलो भल पालीलो सिध पालीलो। खेड़त सूना राणो।।९९।।

सबद-100

ओ३म् अर्थूं गर्थूं साहण थाटूं। कूड़ा दीठो ना ठाटों।। कूड़ी माया जाल न भूलीरे राजेन्द्रं अलगी रही ओजूं की बाटों।। नवलख दंताला बार करीलो। बार करे कर बंद

करीलो।। बंद करे कर दान करींलो। दान करे कर मन फूलीलो।। तंत मंत बीर बेताल करीलो। खायबा खाज अखाजूं।। निरह निरंजन नर निरहारी। तऊ न मिलबा झंझा भाग अभागूं।।१००।।

सबद–101

ओ३म् नितही मावस नित संकरांति। नितही नवग्रह वैसैं पांति।। नितही गंग हिलोले जाय। सतगुरु चीन्है सहजै न्हाय।। निरमल पाणी निरमल घाट। निरमल धोबी मांड्यो पाट।। जेयो धोबी जाणै धोय। घर में मैला वसत्र रहै न

कोय।। एक मन एक चित साबण लावै। पहरंतो गाहक अति सुख पावै।। ऊंचै नीचे करै पसारा। नाहीं दूजै का संचारा। तिल मैं तेल पहुप मैं बास। पांच तंत मैं लियो प्रकाश।। बिजली कै चमकै आवै जाय। सहज शून्य मैं रहै समाय।। नैं यो गावै न यो गवावै। सुरगे जाते बार न लावै।। सतगुरु ऐसा तंत बतावै। जुग जुग जीवै बहुर न आवै।।१०१।।

सबद-102

ओ३म् विष्णु-विष्णु भण अजर जरीजै। धर्म हुवै

पापां छूटीजै।। हरि पर हरि को नाम जपीजै। हरियालो हरि आण हरूं। हरी नारायण देव नरूं।। आशा सास निरास भईलो। पाईलो मोक्ष दवार खिणूं।।१०२।।

सबद–103

ओ३म् देखि अदेख्या सुण्या असुण्या। क्षिमारूप तप कीजै।। थोड़े माहि थोड़ेरो दीजै। होते नाहिं न कीजै।। कृष्णी मया तिहूं लोका साक्षी। अमृत फूल फलीजै।। जोय जोय नांव विष्णु के दीजै। अनन्त गुणा लिख लीजै।।१०३।।

सबद-104

ओ३म् कंचन दानूं कछु न मानूं। कापड़ दानू कछु न मांनू।। चोपड़ दानू कछु न मानूं। पाट पटंबर दानू कछु न मानू।। पंच लाख तुरंगम दानू कछु न मानूं। हस्ती दानू कछु न मानूं। तिरिया दानू कछु न मानूं। मानू एक सुचील सिनानूं।।१०४।।

सबद-105

ओ३म् आप अलेख उपन्ना शिंभू। निरह निरंजन धंधूकारूं।। आपै आप हुआ अपरंपर। नै तद चन्दा नै तद

सूरूं।। पवण न पाणी धरती आकाश न थीयों।। नातद मास न वर्ष न घड़ी न पहरूं। धूप न छाया ताव न सीयों।। न त्रिलोक न तारामंडल। मेघ न माला वर्षा थीयों।। न तद जोग नक्षत्र तिथि न बारसीयो। ना तद चवदश पूनो मावसीयो।। नै तद समद न सागर न गिरि न पर्वत। ना धौलागिर मेर थींयों।। ना तद हाट न बाट न कोट न कसबा। बिणज न बाखर लाभ थीयों।। यह छत धार बड़े सुलतानो। रावण राणा ये दिवाणा हिन्दू मुसलमानू।। दोय पंथ नाहीं जूवा जूवा। ना तद कामन करसण जोगन दर्शन।। तीर्थ वासी ये मसवासी। ना तद होता जपिया तपिया। न

खच्चर हींवर बाज थीयों।। ना तद शूर न वीर न खड़्ग न क्षत्री।। रण संग्राम न जूझ न थीयों।। ना तद सिंह न स्यावज मिरग पंखेरूं। हंस न मोरा लेल सूवो।। रंग न रसना कापड़ चोपड़। गोहूं चावल भोग थीयों।। माय न बाप न बहण न भाई। नातद होता पूत धीयों।। सास न सबदूं जीव न पिंडूं ना तद होता पुरूष त्रियों।। पाप न पुण्य न सती कुसती। ना तद होती मया न दया।। आपै आप ऊपनां शिम्भू। निरह निरंजन धन्धू कारूं।। आपो आप हुआ अपरंपर। हे राजेन्द्र लेह विचारूं।।१०५।।

सबद–106

ओ३म् सुणरे काजी सुणरे मुल्ला सुणियो लोग लुगाई।। नर निरहारी एकल वाई। जिन यो राह फुरमाई।। जोर जरब करद जे छाड़ो। तो कलमा नाम खुदाई।। जिनकै साच सिदक इमान सलामत। जिण यो भिस्त उपाई।।१०६।।

सबद–107

ओ३म् सहजे शीले सेज बिछायों। उनमन रह्या उदासूं।। जुगे जुगन्तर भवे भवन्तर। कहों कहांणी कासूं।। रवि ऊगा

जब उल्लू अन्धा। दुनियां भया उजासूं।। सतगुरु मिलियो सतपंथ बतायो भ्रांत चुकाई। सुगरां भयो बिसवासूं।। जां जां जांण्यो तहां प्रवाण्यो। सहज समाणो। जिहिं के मन की पूगीं आसूं।। जहां गुरु न चीन्हों पंथ न पायो। तहां गल पड़ी परासूं।।१०७।।

सबद-108

ओ३म् हालीलो भल पालीलो सिध पालीलो। खेड़त सूना राणो।। चन्द सूर दोय बैल रचीलो। गंग जमन दोय रासी।। सत संतोष दोय बीज बीजीलो। खेती खड़ी

अकासी।। चेतन रावल पहरै बैठे। मृगा खेती चर नहीं जाई।। गुरु प्रसादे केवल ज्ञाने। ब्रह्मज्ञाने सहज स्नाने। यह घर ऋध सिध पाई।।१०८।।

सबद-109

ओ३म् देखत भूली को मनमानै। सेवै बिलोवै बांझ सनानै।। देखत भूली को मन चेवै। भीतर कोरा बाहर भेवै।। देखत भूली को मन मांनै। हरि पर हर मिलियो शैताने।। देखत भूली को मन चेवै। आक बखांणै थंदे मेवै।। भूलालो भल भूलालो। भूला भूल न भूलूं।। जिहिं

ठूंठड़िये पान न होता। ते क्यूं चाहत फूलूं।।१०९।।

सबद–110

ओ३म् मथुरा नगर की राणी होती। होती पाटमदे राणी।। तीरथ वासी जाती लूटे। अति लूटे खुरसाणी।। मानक मोती हीरा लूट्या। जाय बीलूधा दांणी।। कवले चूकी बचने हारी। जिहिं औगुण ढांचीं ढोवै पांणी।। विष्णु कूं दोष किसो रे प्राणी। आपे खता कमाणी।।११०।।

सबद–111

ओ३म् खरड़ ओढीजै तूंबा जीमीजैं। सुरहै दुहीजै। कृत

खेत की सींव मैं लीजै।। पीजै ऊंडा नीरूं। सुर नर देवा बंदी खानै। तित उतरीया तीरूं।। भोलंब भालब। टोलम टालम। ज्यूं जाणो त्यू आणो।। मैं बाचा दइ प्रहलादा सूं सूचेलो गुरु लाजै। कोड़ तेतीसूं बाड़ै दीन्हीं। तिनकी जात पिछाणो।।१११।।

सबद-112

ओ३म् जांके पंथ का भांजणा। गुरु का नींदणा। स्वामी का दुस्मणा। कुफर ते काफरा।। कुमली कुपातूं कुचिला कुधातूं। हड़ हड़ा भड़ हड़ा। दाणबे दूतबा दाणबे

भूतबा।। राकसा बोकसा। जांका जन्म नहीं पर कर्म चंडालूं।। और कूं जिभै कर आप कूं पोखणा। जिहिंकी रूवा ले दी जैसीं। दोरै घुप अंधारौं।। तान बे तानबा छान बे छानबा। तोड़ बे तोड़बा। कूक बे पुकारबा। जांकी कोई न करबा सारूं।।११२।।

सबद–113

ओ३म् ईमा मोमण चीमा गोयम। महंमद फुरमानीं।। उरका फुरका निवाज फरीजां। खासा खबर बिनाणी।। इला रास्ती ईमा मोमन। मारफत मुल्लाणी।।११३।।

सबद-114

ओ३म् सुरनर तणो सन्देसो आयो। सांभलीयो रे जाटो।। चांदणै थकै अंधेरै क्यूं चालो। भूल गया गुरु बाटो।। नीर थकै घट थूल क्यूं राखो। सबल बिगोवो खाटो।। मागर मणियां क्यूं हाथि बिसाहो। कांय हीरा हाथ उसाटो।। सुरनर तणो संदेशो आयो। सांभलियो रे जाटो।।११४।।

सबद-115

ओ३म् म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियों। मेरा कारण

किरिया देखो।। बिन्दो ब्योहरो ब्योर विचारो। भूलस नाही लेखों।। नदिये नीरूं सागर हीरूं। पवणा रूप फिरै परमेश्वर।। बिंबै बेला निश्चल थाघ अथाघूं। उमग्या समाघूं। ते सरवर कित नीरूं।। गहर गंभीरू। खिण एक सिद्धपुरी विश्राम लियों।। अब जु मंडल भई अवाजूं। म्हे शून्य मंडल का राजूं।।११५।।

सबद-116

ओ३म् आयसां मृगछाला पावोड़ी कांय फिरावो। मतूंत आयसां ऊगंतो भांण थंभाऊं।। दोनों परबत मेर

उजागर। मतूंत अधबिच आन भिडाऊं।। तीन भुवन की राही रूकमण। मतूंत थल सिर आंण बसांऊं।। नवसै नदी निवासी नाला। मतूंतो थल सिर आन बहाऊं।। सीत बहोड़ी लंका तोड़ी। ऐसो कियो संग्रामो।। जां बांणै म्हे रावण मार्‌यो। मतूंतो आयसां गढ़ हथनापुर सै आन दिखाऊं।। जो तू सोने की मृगी कर चलावै। मतूंत घन पाहण बरसाऊं।। मृगछाला पावोड़ी कांय फिरावो। मतूंतो उगंतो भाण थंमाऊं।।११६।।

सबद-117

ओ३म् टूका पाया मगर मचाया ज्यूं हंडियाया कुत्ता।। जोग जुगत की सार न जाणी। मूंड मुंडाय बिगूता।। चेला गुरु अपरचै खीणा। मरते मोक्ष न पायो।।११७।।

सबद-118

ओ३म् सुरगा हूंते शिंभू आयो। कहौ कूंणां के काजै।। नर निरहारी एकलवाई। परगट जोत बिराजै।। प्रहलादा सूं वाचा कीवी। आयो बारां काजै।। बारां मैं सू एक घटै तो। सू चेलो गुरु लाजै।।११८।।

सबद-119

ओ३म् विष्णु-विष्णु तू भण रे प्राणी। पैंकै लाख उपाजूं।। रतन काया बैकुंठे बासो। तेरा जरामरण भय भाजूं।।११९।।

सबद-120

ओ३म् विष्णु-विष्णु तू भणरे प्राणीं। इस जीवन के हावै।। क्षण-क्षण आवै घटंती जावै। मरण दिनों दिन आवै।। पालटीयो गढ़ कांय न चेत्यो। घाती रोल भनावै।। गुरु मुख मुरखा चढै न पोहण मनमुख भार उठावै।ं ज्यूं ज्यूं लाज दुनी की लाजै। त्यूं त्यूं दाब्यो दावै।। भलियो होयसो भली बुध आवै।। बुरियो बुरी कमावै।।१२०।।

अथ कलश पूजा प्रारम्भ

ओं अकलरूप मनसा उपराजी। तामा पांच तत्त्व होय राजी।।1।। आकाश वायु तेज जल धरणी। तामा सकल सृष्टि की करणी।।2।। ता समरथ का सुणो विचार। सप्तदीप नवखण्ड प्रमाण।।3।। पांच तत्व मिल इण्ड उपायों। विगस्यो इण्ड धरणि ठहरायों।।4।। इण्डे मध्ये जल उपजायों। जलमां विष्णु रूप ऊपनों।। ता विष्णु को नाभकंवल बिगसानों। तामां ब्रह्मा बीज ठहरानों।।5।। तां ब्रह्मा की उत्पति होई। भानै घड़ै संवारै सोई।।6।। कुलाल कर्म करत है सोई। पृथिवी ले खाके तक होई।।7।। आदि कुम्भ जहां उत्पन्नों। सदा कुम्भ प्रवर्तते।।8।। कुम्भ की पूजा जे नर करते। तेज काया भौखण्डते।।9।। अलील रूप निरंजनों । जाके न थे माता न थे पिता न थे कुटुम्ब सहोदरम्।। जे करै ताकी सेवा। ताका पाप दोष

क्ष्यो जायंते।।10।। आदि कुम्भ कमल की घड़ी। अनादि पुरुष ले आगे ध
ारी।।11।। बैठा ब्रह्मा बैठा इन्द्र। बैठा सकल रवि अरु चन्द्र।।12।। बैठा ईश्वर दो कर जोड़। बैठा सुर तेतीसां कोड़।।13।। बैठी गङ्गा यमुना सरस्वती। थरपना थापी बाल निरंजन गोरख जती।।14।। सत्रह लाख अठाइस हजार सतयुग प्रमाण। सतयुग के पहरे में सुवर्ण को घाट। सुवर्ण को पाट। सुवर्ण को कलश। सुवर्ण को टको। पांच क्रोड़या के मुखी गुरु श्री प्रहलाद जी महाराज कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म्म हुआ सो इस कलश हुइयो श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।15।। बारह लाख छयानवे हजार त्रेता युग प्रमाण। त्रेता युग के पहरे मैं रूपे को घाट। रूपे को पाट। रूपे को कलश। सुवर्ण को टको। सात क्रोड़या कै मुखी राजा हरिश्चन्द्र तारादे रोहितास कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म हुआ सो इस कलश हुइयो श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो।

ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।16।। आठ लाख चौसठ हजार द्वापर युग प्रमाण। द्वापर युग के पहरे में तांबे को घाट तांबे को पाट। तांबे को कलश। रूपे को टको। नव क्रोड़या कै मुखी राजा युधिष्ठिर कुन्ती माता द्रोपदी पांच पाण्डव। कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म्म हुआ सो इस कलश हुइयो। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।17।। चार लाख बत्तीस हजार कलियुग प्रमाण। कलियुग के पहरे में माटी को घाट माटी को पाट। माटी को कलश। तांबा को टको अनन्त क्रोड़या कै मुखी गुरु जम्भेश्वर कलश थाप्यो। वै कलश जो धर्म्म हुआ सो इस कलश हुइयो। श्री सिद्धेश्वर महाराज भला करियो। ओ३म् विष्णो तत्सत् ब्रह्मणे नमः।।18।।)

–: इति श्री जम्भेश्वर प्रणीत कलशपूजा सम्पूर्णम् :–

अथ पाहल प्रारम्भ

ओं नमो स्वामी शुभकरतार। निर्तार, भवतार, धर्म्म धार पूर्व एक ओंकार।।1।। साधूनां दर्शणम्पुण्यम्। सन्मुखे पापनाशणम्।।2।। जन्म फिरंता को मिलै। सन्तोषी सुचियार। अपणो स्वार्थ ना करै। पर पिण्ड पोषणहार।।3।। पर पिण्ड पोषणहार जीवत मरै। पावै मोक्ष हि द्वार।।4।। एहस पाहल भाइयो साधे लिवी विचार। एहस पाहल भाइयो थूले मेल्ही हार।।5।। एहस पाहल भाइयो ऋषि सिद्धों के काज। एहस पाहल भाइयो ऊधरियो प्रहलाद।।6।। तेतीस कोटि देवाकुली लाधो पाहल बन्द। एहस पाहल भाइयो ऊधरियो हरिचन्द।।7।। पाहल लीन्हीं कुन्ती माता होती करणी सार। साधू एहा भेटिया मिल्यो मोक्ष को द्वार।।8।। आओ पांचों

पाण्डवों। गुरु की पाहल ल्योह। पाहल सार न जाणहीं। तिसे पाहल मत द्योह।।9।। पाहल गति गंगा तणी। जेकर जाणै कोय। पाप शरीरां झड़ पड़ै। पुण्य बहुत सा होय।।10।। नेमतलाई नेमजल। नेम के जीमे पाहल। कायम राजा आइयो। बैठो पाव पखाल।।11।। ऋषि थाप्या गति ऊधरै। देता दिये पाहल। वन वन चन्दन न अगरण। सरसर कमल न फूल।।12।। एका एकी होय जपो ज्यों भागै भ्रमभूल। अड़सठ तीर्थ कांय फिरो। न इण पाहल सम तूल।।13।। गोवल गोवल को को धवल। सब संता दातार। विष्णु नाम सदा जीम। पाहल एह विचार।।14।। सद्गुरु बोले भाइयो। सन्त सिद्ध शुचियार।। मछ की पाहल कच्छ की पाहल। बाराह की पाहल। नृसिंह की पाहल। बावन की पाहल। परशुराम की पाहल। राम लक्ष्मण की पाहल।

कृष्ण की पाहल। बुद्ध की पाहल। निष्कलंक की पाहल। सर्वाधार सर्वशक्तिमान सर्वेश्वर मेरी जम्भेश्वर की पाहल।।16।।

-: इति श्री जम्भेश्वर प्रणीतम् पाहल समाप्तम् :-

साधु गुरु मन्त्र

ओं शब्द सोहं आप। अन्तर जपै अजप्या जाप।।

सत्य शब्दले लंघै घाट। बहुरि न आवै योनि वाट।।

परसै विष्णु अमृत रस पीवै। जरा न व्यापै युग युग जीवै।।

विष्णु मंत्र है प्राणाधार। जो कोई जपै सो उतरै पार।।

ओं विष्णु सोहं विष्णु तत स्वरूपी तारक विष्णुः।।

-0-0-0-

गृहस्थ गुरु मन्त्र

(सुगरा मन्त्र)

ओम् शब्द गुरु सूरत चेला। पांच तत्व में रहे अकेला।।
सहजे जोगी शून्य में वास। पांच तत्व में लियो प्रकाश।।
ना मेरे माई ना मेरे बाप। अलख निरंजन आपही आप।।
गंगा यमुना बहै सरस्वती। कोई कोई नहावे बिरला यती।।
तारक मन्त्र पार गिराम। गुरु बतायो निश्चय नाम।।
जो कोई सुमिरै उतरै पार। बहुरि न आवै मैली धार।।

-0-0-0-

बालक मन्त्र

ओम् शब्द गुरु देव निरंजन। ता इच्छा से भये अंजन।।
हरि के हाथ पिता के पिष्ट। विष्णु माया उपजी सिष्ट।।
सप्तधात को उपज्यौ पिंड। नौ दस मास बालो रह्यो अघोर कुंड।।
अरध मुख ता उरध चरण हुतास। हरी कृपा से भया खलास।।
जल से न्हाया त्याग्या मल। विष्णु नाम सदा निरमल।।
विष्णु मंत्र कान जल छूवा। श्री जम्भगुरु कृपा से विश्नोई हुवा।।

-: इति बालक मन्त्र सम्पूर्णम् :-

विविध प्रकार की उन्नतीस नियम व्याख्या

।। चौपाई ।।

मास एक सूतक तुम मानों। पंचदिवस तक ऋतुमती जानों।।
प्रातरुत्थाय करो सब स्नाना। पालो शील (शौच) तौष सुजाना।।
दोनों काल की सन्ध्या मानी। मुनि जन गण यह साक्षी बखानी।।
सन्ध्या कर काटो मन मैला। देश विभक्त गहौ पुन शैला।।
सायंकाल विष्णु गुण गाओ। कर आरती परमानन्द पाओ।।
प्रेम सहित सब होम कराओ। पुनः बैकुण्ठ बास सब पाओ।।
अमृत पूत करो सब पाना। सम्यति एक करो मत नाना।।
पूत करो वाणी सुख दायी। विष्णु भजन में होगी सहाई।।

इन्धन छान बीन कर लेना। दृष्टि पूत बिन कहुं नहीं देना।।
क्षमा दया उर में सब धारो। गुरु आज्ञा बिन सब को टारो।।
गुरु जी जान कियो उपदेशा। धारण करो विष्णु आदेशा।।
हेय करो चोरी अरु निन्दा। इन संग मिथ्या जानों धन्धा।।
इन तीनों को बर्जो भाई। वाद विवाद न करियो कोई।।
अमावस्या व्रत कबहूं न टारो। विष्णु भजन कर कुल निस्तारो।।
जीव दया राखो मन माहीं। जिहिं राखे सब अघ मिटि जाहीं।।
वृष आदि स्थावर सब सृष्टि। ब्रह्मरूप यह जान समष्टी।।
इनमें नाना जीव विराजै। चेतन रूप सकल वपु छाजै।।
बिना विचारे नहीं इन्हें हरना। काट बाढ़ घर में नहीं धरना।।

अजर क्रोध जो ताहिं जरावै। लोभादि को दूर भगावै।।
निर अभिमानी ब्रह्मानन्दा। रहै मगन विचारै स्वै छन्दा।।
जीवन मुक्त सदा वैरागी। जांकी लगन स्वर्ग से लागी।।
अपने हाथ से पाक बनावै। पुनः एकांत बैठकर पावै।।
अजा अवी सब अमर रखावै। वृषभ नपुन्सक होने न पावै।।
अमल तमाल भांग नहीं पीना। कर निषेध रहै सदा अदीना।।
मद्य अरु मांस कभी न खावै। नीलाम्बर तन कबहुं न लावै।।

दोहा –

उनतीस धर्म की आखड़ी, हिरदय धारै जोय।
जम्भराय ऐसे कहै, फेर जन्म नहीं होय।।

-: चौपाई :-

उनतीस धर्म की नीति चलाई। सब शिष्यन के मन में भाई।।
विंशति नौ जब नियम बनाये। तब से ये विश्नोई कहाये।।
जांभाजी ने पंथ चलाया। सन्मार्ग सबको दिखलाया।।
शिखा सूत्र सबके उतराये। देख दशा ब्राह्मण घबराये।।
जाति भेद सब दूर भगाया। अद्‌भुत मार्ग खूब दिखाया।।
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य मुंडाए। सत्यगुरु के शरणै आये।।
किये संस्कार सर्व के स्वामी। सकल गुरु जम्भानन्द नामी।।
मद्य मांस सब के छुड़वाये। पाहल दे निज दास बनाये।।
पुनः सबको यह कियो उपदेशा। हिल मिल रहना यही आदेशा।।

उनतीस धर्म का कीजो मण्डन। कीजो काम क्रोध का खण्डन।।
गुरु की बाणी बेद सम मानी। ताको पढ़ हो गये बहु ज्ञानी।।
वाणी पढ़ लहो परमानन्दा। आन मतो का त्यागो फन्दा।।
सत्यवादी निरमान कहावै। अद्वै अमल ब्रह्म गुण गावै।।
जीतो संग दोष सब भाई। ब्रह्म विद्या की करो बड़ाई।।
निवृत करो खोटे सब कामा। विष्णु पुरी में करो विश्रामा।।
हानि-लाभ में सुख-दु:ख नहीं पाना। कर सन्तोष विष्णु गुण गाना।।
जम्भ-2 पुन: जम्भ जी गाओ। निश्चय निकट जम्भ पद पाओ।।
न तहां चद्र सितारे भानूं। न तहां अग्नि विद्युत जानूं।।
उसी धाम में जम्भ विराजै। सर्वाधार सकल मन राजै।।

मन का मन पुनः सर्वाधारा। रह सर्व में सब से न्यारा।।
कारण से कारज उपजाया। कर पैंदा सबको दिखलाया।।
यह सब जानों जम्भ पसारा। जम्भ न बन्धा बन्धा संसारा।।
अद्वय अजर जम्भ अविनाशी। जिन यह सारी सृष्टि प्रकाशी।।
जम्भजी सद्‌गुरु एकोंकारा। भजो ताहि जो कटै विकारा।।
वेद पुराण विष्णु गुण गावै। नेति नेति कह भेद न पावै।।
विष्णु जगद्‌गुरु सिरजनहारा। ले अवतार मनुज तनधारा।।
दासन के तिन कारज सारे। दे उपदेश अधम जन तारे।।
विष्णु ही पूर्ण परम विधाता। बिन विष्णु को नहीं जग त्राता।।
लोहट घर हरि लीन्ह अवतारा। प्रमर गोत्र का मुकुट सितारा।।

केसर मात कृतार्थ कीन्हीं। अलभ्य मुक्ति प्रभु ताको दीन्हीं।।
और अनेक भक्त प्रभु तारे। काम क्रोध शत्रु सब मारे।।
इसी अर्थ प्रभु लीन्ह अवतारा। भक्तन का शत्रु दल मारा।।
अजर अमर गुरु जम्भ संन्यासी। पूर्ण ब्रह्म सकल घटवासी।।
परमानन्द सकल अघ जारण। आयो जंभ सकल जग तारण।।
मुनि जन सब बांके गुण गावैं। धर्म अर्थ मुक्ति फल पावैं।।
योग समाधि आप प्रभु लावैं। सब शिष्यन को योग सिखावैं।।
धारणा ध्यान समाधि बतावैं। प्रत्याहार खूब समझावैं।।
यम और नियम की बात सिखावैं। प्राणायाम खूब बतलावैं।।
इन आठन का करै विस्तारा। जम्भगुरु जग सिरजन हारा।।

वैर भाव सब से छुड़वायो। भाषण सत्य सबन समझायो।।
ब्रह्मचर्य सब का रखवावै। सब से चोरी त्याग करावै।।
सबके विषय विकार मिटावै। यही अपरिग्रह अर्थ बतावै।।

-0-0-0-

दोहा -

मास एक सूतक कहूं, रजस्वला दिन पांच।
जो इनको पालै नहीं, लगै धर्म की आंच।।1।।
प्रात:काल ऊठणों, उसी समय को स्नान।
याविधि जो वरते सदा, होत जहां तहां मान।।2।।

शील संतोष पालन करैं, उज्ज्वल राखौ अंग।
बाहर भीतर एकरस, कहै मुनिजन संग।।3।।
दोनों काल सन्ध्या करैं, शमन करै मन धीर।
इन्द्रिय गण को रोकनों, दम भाषत बुध वीर।।4।।
सायंकाल में जायके, ढूंढे निर्जन देश।
विष्णु नाम रसना जपै, लोग करै आदेश।।5।।
दत्तचित्त से होम करै, राखौ बहुत आचार।
मन में धारै विष्णु को, तब उतरै भवपार।।6।।
वाचा निशदिन बोलिये, सत्य सहित सुन वीर।
जन्म मरण से छूटकर, बनो आप गम्भीर।।7।।

पानी पी तू छानकर, निर्मल बाणी बोल।
इन दोनों का वेद में, नहीं मोल कुछ तोल।।8।।
समिधा लीजै देखकर, कृमी बचाकर बीर।
स्थावर जंगम आत्मा, देखौ सकल शरीर।।9।।
चोरी निन्दा झूंठ को, तजियो सभ्य सुजान।
क्षमा दया उर धारिके, पहुंचो पद निर्वाण।।10।।
शुष्क वाद नहिं कीजिये, मनु बतायो जोय।
श्रद्धा लज्जा धारके, सुख पाओ सब कोय।।11।।
सुने बहुत उपवास में, इनमें नहीं कुछ सार।
व्रत अमावस को सही, कियो वेद निरधार।।12।।

व्रत अमावस के किये, मल विक्षेप को नाश।
मल विक्षेप के नाशन तैं, होतहि बुद्धि प्रकाश।।13।।
इनके खण्डन की दवा, तुझे बताई जोय।
याके राखे जगत में, बहुरि न आना होय।।14।।
ओ३म् विष्णु-2 जपते रहो, जब लग घट में प्रान।
इसी नाम के जपन तै, मिलै श्री विष्णु भगवान।।15।।
जीव दया नित पालणी, सदाचार यह जाण।
तन मन आत्म वस करैं, पहुंचै पद निर्वाण।।16।।
हरा वृक्ष नहीं काटना, यह सब का मन्तव्य।
रक्षा में तत्पर रहै, जान यही कर्तव्य।।17।।

अजर काम अरु क्रोध है, अजर लोभ को जान।
इनको जो निशदिन जरै, सो पावै सन्मान।।18।।
संस्कार से रहित जन, सो वह शुद्र समान।
पाहल दीजै ताहिं को, कीजै ब्रह्म समान।।19।।
तिसके हाथ का अन्न-जल, अशन करो सब वीर।
अथवा अपने हाथ से, पाक बनाओ धीर।।20।।
छेरि भेड़ी आदि को, पर उपकारी मान।
रक्षा में तत्पर रहै, सोई बुद्धिमान।।21।।
इनसे अधिक जूं बैल है, परउपकारी जोय।
ताको बधिया नहीं कर, ब्रह्मवेत्ता है सोय।।22।।

भांग तमाखू छोतरा, इनका कीजे त्याग।
मद्यमांस को त्याग कै, कर ईश्वर अनुराग।।23।।
स्वेताम्बर धारण करैं, नहीं नीलाम्बर होय।
धर्म कहै उनतीस ये, धारै वैष्णव सोय।।24।।

-: छन्द :-

जंभ ब्रह्म सनातनं, गुरु एक सच्चित जानियों।
जगद्वन्द्य पुरातनं, जगदीश निश्चय भानियो।।
जंभ विष्णु विष्णु जंभ जी, यामें भेद न ठानियो।
श्रीजंभ गुण गाते हुए, दोषो को निशदिन भानियों।

चौपाई –

जैमे भानु उदय उजियारो। दूरि करै जग को अन्धियारो।।1।।

तैसे जम्भ गुरू जग मांही। सदुपदेश दे तिमिर नशांही।।2।।

सब शिष्यन के अघ प्रभु हरता। विज्ञानोदय मन में करता।3।।

ऐसा सुना महा उपकारी। क्षण में दे संशय सब टारी।।4।।

ऐसो है गुरू जम्भ विवेकी। जग में विचरै एकाएकी।।5।।

हे जम्भेश्वर परम दयालु। दूरी करो अज्ञान कृपालु।।6।।

हृदय ग्रन्थि सब दूरि भगाओ। मेरे सब सन्देह मिटाओ।।7।।

धर्म संख्या द्यो मुझे समुझाई। पृथक् पृथक् अब देओ सुनाई।।8।।

जम्भेश्वर गुरू शब्द सुनायो, जोगी का सन्देह नशायो।।9।।

उन्नतीस नियम

ओं तीस दिन सूतक, पांच ऋतुवंती न्यारो।
सेरों करो स्नान, शील सन्तोष शुचि प्यारो।।
द्विकाल सध्या करो, सांझ आरती गुण गावो।
होम हित चित प्रीत सूं होय, बास बैकुण्ठ पावो।।
पांणी बांणी ईन्धणी, दूध, इतना लीजै छाण।
क्षमा दया हिरदै धारो, गुरू बतायो जाण।।
चोरी निन्दा झूठ बरजियो, वाद न करणो कोय।
अमावस्या व्रत राखणों, भजन विष्णु बतायो जोय।।

जीव दया पालणी, रूंख लीला नहि घावै।
अजर जरै जीवत मरै, वै वास स्वर्ग ही पावै।।
करै रसोई हाथ सो, आन सुं पला न लावै।
अमर रखावै थाट, बैल बधिया न करावै।।
अमल तमाखू भांग मद्य सूं दूर ही भागै, मांसनै दूर ही त्यागै।
लील न लावै अंग, देखत दूर ही त्यागै।।

-: दोहा :-

उणतीस धर्म की आखड़ी, हिरदै धरियो जोय।
जाम्भे जी किरपा करी नाम विष्णोई होय।।

श्री संत वील्हा जी कृत बत्तीस आखड़ी

सेरा उठै सुजीव छाण जल लीजियै। दातण कर करै सिनान जीवाणि जल कीजियै।
वैस इकांयत ध्यान नाम हरि पीजियै। रवि उगै तेही वार चरण सिर दीजियै।।
गऊ घृत लेवे छाण होम नित ही करो। पंखै से अग्न जगाय फूंक देता डरो।।
सूतक पातक टाल छाण जल पीजियै। कर आत्म को ध्यान आरती कीजियै।।
मुख बोलो जै साच झूठ नहीं भाखियै। नेम झूठ सूं जाय जीभ बस राखियै।।
निज प्रसुवा गाय चूंगती देखियै। मुखां बताइये नाहीं और दिस पेखियै।।
अमावस व्रत राख खाट नहीं सोइयै। चोरी जारी त्याग कुदृष्ट नहीं जोइयै।।
नेम धर्म गुरू कहै कदे नहीं छोड़ियै। लाधी वस्तु पराई बोल देवोड़ियै।।
जीव दया नित राख पाप नहीं कीजियै। जांडी हिरण संहार देख सिर दीजियै।।

बधिया करै तो बैल जु देख छोड़ाइयै। बरजत मारै जीव तहां मर जाइयै।।
ऋतुवन्ती ह्वै नार पलो नहीं छुइयै। पांचू कपड़ा धोय न्हाय सुधि होइयै।।
सूतक पातक अन्त घरहुं लिपवाइयै। गऊ घृत सुध छाण जु होम कराइयै।।
जल छाणै दोय वारहि सांझ सवेरे ही। जीवाणी जल जोड़ कुवै जाय गेरहीं।।
राख दया घट माही वृक्ष घावै नहीं। घर आवै नर कोय भूखा जावै नहीं।।
अमावस दिन धर्म इता नित पालियै। गायर बच्छो बैल बेचन सूं टालियै।।
पंथ न चालै भूल खाट न सोइयै। ऊखल खड़वै नाहीं चाकी नहीं झोइयै।।
वस्त्र धोवै नाहिं सीस नहीं धोइयै। जूवां लीखां नाव लिया पुन खोइयै।।
ओलै अमावस दूध दधी नहीं मथ्थियै। साखी हरीजस गाय ज्ञान गुण कथ्थियै।।
दांती कसी गंडासी बांण नहीं वाइयै। धोबी चकरी ढेढ घरे नहीं जाइयै।।

चमारां घर जाय भूल करि बैठ है। नरक पड़ै निरधार रकत मैं पैठ है।।
आन जात को पार्णी भूल नहीं पीजियै। बिन मांज्या बरतन कबहुं नहीं लीजियै।।
चौके बिना रसोई कबहुं मत करो। गऊ बैठक शत ग्रह करत तुम जन डरो।।
ब्राह्मण दश प्रकार तीन सुध जानियै। अमल तमाखू भांग लील नहीं ठानियै।।
इह औगण नहीं होय विप्र सुध है सही। और छत्तीसूं पूंण एक सम गुरू कही।।
वे अस्नाने कोय जो पलो लगावहीं। न्हायै ते सुध होय गुरू फरमावहीं।।
अपने घर में बैठ निंद्या नहीं कीजिये। देख्या सुण्यां अदेख जु अजर जरीजिये।।
त्रिधां देवा साधां सूं संग कीजिये। गुरू ईश्वर की आण नहीं भानीजिये।।
हल अरू गाठो गाडि बैल नहीं वाहिये। जीव मरे जेहि काम कदे न कराइये।।
अमावस को दूध जू भूलन भलोंय है। कदेन उतरै पार रक्तसम होय है।।

होके पाणी आग कदे नहीं दीजिये। अमल तमाखू नाम भूल नहीं लीजिये।।
जूवां लीखां काढ छाह मैं डारिये। इन मार्‌या सुख होय पुत्र क्युं नी मारिये।।
घर को बकरो भेड़ थाट संग कीजिये। बेच्यो कूट्‌यो बेल उलट नहीं लीजिये।।
तीसां ऊपर दोय आखड़ी गुरू कही। जो विश्नोई होय धर्म पालैं सही।।
गहै धर्म बत्तीस तीर्थ सब न्हाइया। अड़सठ तीरथ पुण्य घरां चल आविया।।
गह गुनतीस बतीस विष्णु जन जानिये। इकसट सातूं छोत अड़सठ एहि मानिये।।
देखा देखी तीर्थ और नहिं कीजिये। मन सुरती कूं जीत परमपद लीजिये।।
पाले गुरु का कवल जम्भ गुरु ध्यावे है। घाटो भूख कुरूप कदे नहीं आवे है।।
यहि विधि धर्म सुनाय कह्यो गुरू जगत नै। अज्ञानी कूं डांस प्रिये ज्ञानी भक्त नै।।
या विधि धर्म सुनायके, किये कवल किरतार। अनधन लक्ष्मी रूप गुन, मूवां मोक्ष द्वार।।

कवित

आदि अनादि युगादि को योगी,
लोहट घर अवतार लियो है।
धनहीं धन भाग बड़ो,
जिन हांसल को हरि मात कह्यो है।।
होत उजास प्रकाश भयो,
जैसे रेन घटी अरू भोर भयो है।
कोटी दवादश काज के तांही,
केशवदास भणे संभराथल आय रह्यो है।।

-: छप्पय :-

श्री सन्त वील्हा जी कृत

ॐ जम्भ गुरु जगदीश, ईश नारायण स्वामी।
निर लेखक निरलेप, सकल घट अन्तर्यामी।
पेट पीठ नहिं ताहि, सकल को सन्मुख दर्शे।
पाप ताप तन हरे, जहां पद पंकज पर्शे।
अखे अडोल अनन्त अज, अवगत अलख अभेव।
स्वयं स्वरूपी आप है, जम्भगुरू जगदेव।

जम्भगुरू जगदेव, भेव कोई बिरला पावै।

रहै शरण जो आय, बहुरि भवजल नहि आवै।

विष्णु धर्म परगट कियो, धर्म विकट विहंडनम्।

संभराथल परगट सही, ज्योति स्वरूप जगमण्डनम्।

।। इति ।।

विशेष वक्तव्य – मद्यपान करने वाले जो ईश्वर विमुख पुरूष हैं उनके पास एक क्षणमात्र भी न बैठना चाहिए। यही विश्नोई लोगों का परम धर्म श्री जम्भगुरू जी ने अपने मुख से वर्णन किया है।

आरती

आरती हो जी सम्भराथल देव, विष्णु हर की आरती जय।
थारी करे हो हांसल दे माय, थारी करे हो भक्त लिवलाय।टेर।
सुर तेतीसां सेवक जाके, इन्द्रादिक सब देव।
ज्योति स्वरूपी आप निरंजन, कोई एक जानत भेव।।1।।
पूर्ण सिद्ध जम्भगुरू स्वामी, अवतरे केवलि एक।
अन्धकार नाशन के कारण, हुए हुए आप अलेख।।2।।
सम्भराथल हरि आन विराजे, तिमिर भयो सब दूर।
सांगा राणा और नरेशा, आये आये सकल हजूर।।3।।
सम्भराथल की अद्भुत शोभा, वरणी न जात अपार।
सन्त मण्डली निकट विराजे, निर्गुण शब्द उच्चार।।4।।

वर्ष इक्यावन देव दया कर, कीन्हो पर उपकार।
ज्ञान ध्यान के शब्द सुणाये, तारण भवजल पार।।5।।
पंथ जाम्भाणो सत्यकर जाणो, यह खांडे की धार।
सत प्रीत सूं करो कीर्तन, इच्छा फल दातार।।6।।
आन पंथ को चित्त से टारो, जम्भेश्वर उर ध्यान।
होम जाप शुद्ध भाव सों कीजो, पावो पद निर्वाण।।7।।
भक्त उद्धारण काज संवारण, श्री जम्भगुरू निज नाम।
विघ्न निवारण शरण तुम्हारी, मंगल के सुख धाम।।8।।
लोहट नन्दन दुष्ट निकन्दन, श्री जम्भगुरू अवतार।
ब्रह्मानन्द शरण सतगुरू की, आवागवण निवार।।9।।

-0-0-0-

यज्ञ पूर्ण आहुति मन्त्र

दोनों मन्त्रों को तीन बार पढ़कर आहुति दें।

ओ३म् पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ओ३म् सर्ववै पूर्णं स्वाहा।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

धूप मन्त्र

महर करो महाराज, महर करो महल पधारो।
त्रिकुटी भवन में वास, दास के संकट टारो।
धूप घृत मिष्टान, पाय प्रभु पाप निवारो।
जम्भ गुरू जगदीश, सन्त के कारज सारो।
चौष लेह्य भक्ष भोज रस, अचवन करो अघाय।
साहब हृदय सन्त के, सदा रहो सुरराय।।1।।
धूप लीजिये जलन, धूप ले रूप समावो।
कृपा करो कर गहो, हरि तुम हिरदै आवो।

वासुदेव विश्वेश, विश्वधर ब्रह्म रहावो।
हृदय ध्वांत कूं हरी, ज्ञान उद्योत करावो।
ज्ञान अग्न जोगा अगन, जठरा अग्न प्रचण्ड।
साहब ससितारा तड़ित, तूं ही तरूण मार्तण्ड।
तूं ही तेज तप करै, निरंजन नाम धरावै।
ब्रह्म तेज बल रचैं, विष्णु शिव पाल नसावै।
इन्द्र तेज तप करै, सप्त नवखण्ड बसावै।
शेष तेज लवलेश, शीस ब्रह्माण्ड उठावै।
तपही साध तपही ऋषी, तप कर तेज अपार।

तप कर साहब अवनिपति, तेजपुंज ततसार।।3।।
शब्द रूप सोइ जोत, जोत निहतंत भणीजै।
अमीतत सोइ जोत, जोत सब हंस गिणीजै।
तेज शीला सोई जोत, निरंजन जोत जाणीजै।
हिरण्यगर्भ सोई जोत, जोत विराट तणीजै।
महातत ब्रह्मा विष्णु शिव, सबही जोत अपार।
दस चौबीसूं जोत है, साहब सो उर धार।4।
महाजोत गुरू जम्भ, भक्त हित लीलाधारी।
सप्त वर्ष रहे मौन, सप्त बीसूं गऊ चराई।

इक्यावन कथ ज्ञान, शब्द अणभै अधिकारी।
पच्यासी त्रिय मास, तेज तप लाई तारी।
आठम सोम अठोतरै, पंद्रासै अवतार।
तिराणवै मिंगसर वद नवमी, साहब पहुंचे पार।।5।
इति धूप मंत्र साहबराम राहड़ कृत सम्पूर्णम्

कवित

ओ३म् प्रगटे जब रूप निरंजन, यह जम्भेश्वर नाम कहावन को।
गेरुवां वस्त्र धर जाप जपैं, संभराथल जाग जगावन को।
गुरु आप अखण्डित एक भजै, सब लोगन के समझावन को।
जिन पावन से महि कीन्ह शुची, धन्यवाद सदा उन पावन को।

-0-0-0-

श्री वील्हो जी कृत धूप मंत्र

ओ३म् वर्ष सात संसार, बाल लीला निरहारी।
वर्ष पांच बाईस, पाले बहुता धेनु चारी।
ग्यारह ऊपर चालीस, शब्द कथिंया अविनाशी।
बाल ग्वाल गुरू ज्ञान, सकल पूगा सवा पच्यासी।
पन्दरासै तिरानवै वदि, मिंगसर नौ आगले।
पालटियो रूप रहिया धूव, इडिग ज्योति संभराथले।

-0-0-0-

कवित

जोगी जंभ देव जटा जूट धारी शंभु जैसे,
भव्य देह भ्राजत है भगवा सुवेश में।
परम प्रंचंड दौर दंड दंभ खंडन को,
मंडन महान धर्म देशरू विदेश में।
ज्ञान की दशा में उन्मत्त विष्णु भक्त भारी,
दत्त अवधूत जैसे देन उपदेश में।
शेष में सुरेश में दिनेश में न एते गुण,
तेते गुण गुरु में विराजत विशेष में।

-0-0-0-

छप्पय

श्री गुरु जांभा शिष्य भक्त रणधीर भंडारी।
सुवरण की जो सिलम, अछय पाई उपकारी।।
तातैं करि करि दान, मान पायो मरुधर में।
कीरति लता अखूट, घणी पसरी घर-घर में।।
मंदिर मुकाम विरच्यो महा, देखि दुष्ट जन जरि गये।
खल गरल खवायो ताहितै, तन तजि ध्रुव यश करि गये।।